शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321–9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

# विश्व स्नेह समाज

वर्ष 20, अंक 05, फरवरी 2021

हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

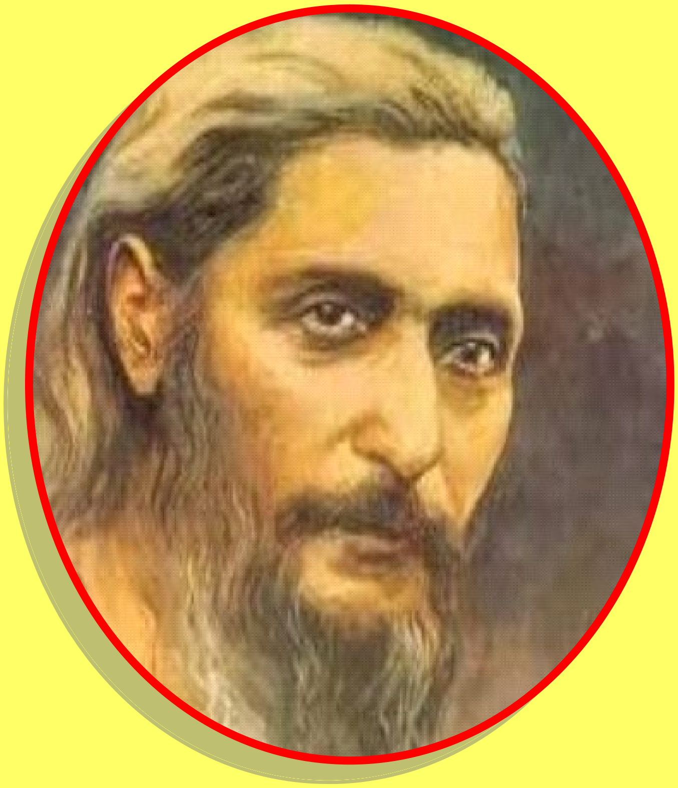

आयी याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,
आयी याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,
आयी याद कान्ता की कमनीय गात,
फिर क्या? पवन उपवन–सर–सरित गहन–गिरि–कानन

मूल्य : 15 रुपये

# विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज

तृतीय ऑन लाईन गोष्ठी का विषय :

## हिन्दी सूफी काव्य में धर्मनिरपेक्षता

आयोजन की तिथि : 28 फरवरी 2021, समयः सायं 7 बजे

लघु शोध लेख भेजने की अंतिम तिथि 23.02.2021

इसमें दो भाग है लघु शोध लेखन (शब्द सीमा 3000 से 5000) और वाचन (आडियो) अधिकतम 9 मिनट। कोई भी हिन्दी प्रेमी इसमें प्रतिभाग कर सकता है. सर्वश्रेष्ठ वाचक को सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित जी द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर सम्मानित किया जाएगा एवं सर्वश्रेष्ठ शोध लेख को संस्थान द्वारा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करेगा एवं लेख को शोध पत्रों के प्रकाशन के लिए विधि मान्य संस्थान की मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के आगामी अंक में प्रकाशित भी किया जाएगा।

विशेषः यह गोष्ठी प्रत्येक माह की 30 तारिख को हिन्दी साहित्य के इतिहास पर क्रमानुसार चलती रहती है।

आयोजकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, लखनऊ, ईकाई

अपने शोध एवं आडियो संस्थान के ई-मेल आईडी hindiseva15@gmail.com, पर भेज सकते है एवं वाचन के लिए निम्नलिखित ह्वाटसएप नंबर 9335155949, श्रीमती वंदना श्रीवास्तव-हिन्दी सांसद, लखनऊ : 9453672244 पर आयोजन के पांच दिन पूर्व सम्पर्क कर सकते है। कृपया फोन पर वार्ता न करें।

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

# विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष:20, अंक: 05
फरवरी : 2021

## इस अंक में......

**अंग्रेजी हटाए बिना हिंदी कैसे लाएँगे?...........5**

**मानवीय-चेतना के अभ्यासी और हिंदी के पुरोधा संत विनोबा भावे......... .......... . 07**

**आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन की समस्या... ................... 10**

स्थायी स्तम्भ

अपनी बात: आंदोलन एवं मीडिया की भूमिका .......04

केन्द्रीय बजट-२०२१ एक आईने में ........6

सांस्कारिक पतन के जिम्मेदार.... ..........09

सोशल मीडिया से 'अगर आप कुछ तोड़ना ही चाहते हैं, तो अपना पुराना रिकार्ड तोड़ें, परिवर्तन. ........11, 17, 30

ये आग कब बुझेगी : ज्वलंत विषयों पर मीडिया की भूमिका .........................12

गंभीर अभिनेता ''इरफान खान'' याद आयेंगे ............14

धारावाहिक उपन्यास: मुगल-ए-आजम की विरासत................ 16

कविताए/गीत/ग़ज़ल: कैलाश त्रिपाठी, शबनम शर्मा, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', अखिलेश निगम 'अखिल', हितेश कुमार शर्मा . .............18, 19

हिंदी रीति काव्य-नए सन्दर्भ में ...... 20

लघु कथाएं: डॉ० प्रकाश कुमार अग्रवाल, सीताराम गुप्ता, शबनम शर्मा .......25

कहानी: गुलदस्ता .......27

साहित्य समाचार ..................30

**मुख्य संरक्षक**
श्री बुद्धिसेन शर्मा
**संरक्षक सदस्य**
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

**प्रबंध सम्पादक**
श्रीमती जया
**विज्ञापन प्रबंधक**
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

**ब्यूरो**
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

**सम्पादक**
**गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी**

**संपादकीय कार्यालय:**
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/

2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोट:पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

# जन सुनवाई शिकायत निवारण प्रणाली और उसकी उपयोगिता

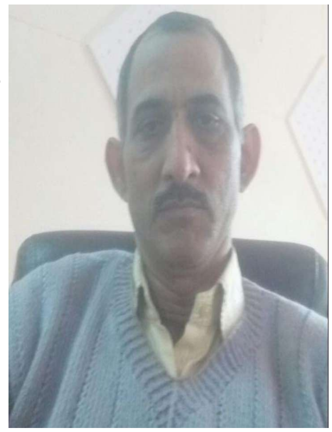

अपने देश में समन्वित शिकायत निवारण प्रणाली (आई.जी.आर.एस.) केन्द्र और कुछ राज्य सरकारों द्वारा बड़े आम आदमी की समस्याओं के समाधान के लिए बनाई गई है जिसकी केन्द्र सरकार की वेबसाईट pgportal.gov.in और उत्तर प्रदेश राज्य सरकार की jansunwai.up.nic.in_ है. इसके साथ ही 1076 पर आप फोन कर भी अपनी शिकायतें ऑन लाईन दर्ज करा सकते हैं. इसमें किसी भी विभाग (शिक्षा, भूमि कब्जा, पुलिस, जमीन, इत्यादि) की शिकायतों को निःशुल्क दर्ज करवा सकते है. बहुत ही सुंदर, सराहनीय व आसान रास्ता है किसी भी समस्या को सक्षम अधिकारी के समक्ष उठाने के लिए. इसमें शिकायत करने पर एक निर्धारित अवधि के अंदर सक्षम अधिकारी द्वारा जबाब देना जरुरी होता है. अगर आप उस जबाब से संतुष्ट नहीं होते तो अपनी आपत्ति बार-बार दर्ज करा सकते है. लेकिन जब इसके तह में जाते है तो पाते है कि हकीकत इसके विपरीत होती है.

उदाहरण के लिए अगर आप आयुक्त (मंडलायुक्त) महोदय के खिलाफ शिकायत करते है तो उसकी जांच उसी प्रभाग (मंडल) के मुख्यालय जिला के जिलाधिकारी(डी.एम.) को सौंप दी जाती है, जिलाधिकारी की जांच उसी के अधीन उपजिलाधिकारी (एस.डी.एम.) को, उपजिलाधिकारी की जांच उसी के अधीन लेखपाल को, पुलिस महानिरीक्षक की शिकायत उसी के अधीन उसी जिले में तैनात पुलिस उप महानिरीक्षक, पुलिस उप महानिरीक्षक/पुलिस अधीक्षक की शिकायत उसी जिले के, उसके अधीन क्षेत्राधिकारी अथवा थानेदार को. विश्वविद्यालयों के कुलपति के खिलाफ शिकायत को उसके अधीन कार्यरत कुलसचिव को ......... उदाहरण के लिए आपने माननीय प्रधानमंत्री जी या माननीय मुख्यमंत्रीजी से अपने जिले का जिलाधिकारी के किसी आदेश या कार्य के खिलाफ शिकायत पत्र के माध्यम से अथवा ऑन लाईन करते है तो आपकी शिकायत प्रधानमंत्री कार्यालय या मुख्यमंत्री कार्यालय से सम्बन्धित जिले के उपजिलाधिकारी को ऑन लाईन स्थानान्तरित कर दी जाएगी और उसको यह निर्देश होगा कि १५ दिनों या ३० दिनों के अंदर कार्यवाई करते हुए जांच आख्या प्रस्तुत करने को कहा जाता है. अब आप सोच लो कि अपने अधिकारी के खिलाफ जो उसका चरित्र प्रमाण पत्र प्रतिवर्ष लिखता है उसके खिलाफ क्या जांच करेगा और क्या आख्या लगाकर भेजेगा. यह तो एक वानगी मात्र था. आगे आप खुद समझदार हो क्या जांच होगी, कैसी जांच होगी, क्या आख्या आएगी? लेकिन जब सरकारी आकड़ा आएगा तो दिखाया जाएगा कि १ लाख शिकायतों का निस्तारण किया गया.

यह कमी किसी भी सरकार का नहीं बल्कि उसकी सोच को क्रियान्वित करने वाले अधिकारियों की है. जो इसी तरह किसी भी सरकार की जनोपयोगी योजना की लिपापोती कर देने में महारत हासिल किए हुए है. एक सामान्य आदमी भी यह सोच सकता है कि किसी अधिकारी के खिलाफ उसका अधीनस्थ कभी कुछ गलत नहीं लिख सकता है. कम से कम समकक्ष या ऊपर के अधिकारियों को जांच देने चाहिए वह भी अन्यत्र जिले या क्षेत्र के.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

# अंग्रेजी हटाए बिना हिंदी कैसे लाएँगे?

**हमारे नेता नौकरशाहों के नौकर हैं. वे दावा करते हैं कि वे जनता के नौकर हैं. चुनावों के दौरान जनता के आगे वे नौकरों से भी ज्यादा दुम हिलाते हैं लेकिन वे ज्यों ही चुनाव जीतकर कुर्सी में बैठते हैं, नौकरशाहों की नौकरी बजाने लगते हैं. भारत के नौकरशाह हमारे स्थायी शासक हैं. उनकी भाषा अंग्रेजी है. देश के कानून अंग्रेजी में बनते हैं, अदालतें अपने फैसले अंग्रेजी में देती हैं, ऊंची पढ़ाई और शोध अंग्रेजी में होते हैं, अंग्रेजी के बिना आपको कोई ऊंची नौकरी नहीं मिल सकती.**

**-डा. वेदप्रताप वैदिक**

(लेखक, भारतीय भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष हैं)

भारत सरकार को हिंदी दिवस मनाते-मनाते 70 साल हो गए लेकिन कोई हमें बताए कि सरकारी काम-काज या जन-जीवन में हिंदी क्या एक कदम भी आगे बढ़ी? इसका मूल कारण यह है कि हमारे नेता नौकरशाहों के नौकर हैं. वे दावा करते हैं कि वे जनता के नौकर हैं. चुनावों के दौरान जनता के आगे वे नौकरों से भी ज्यादा दुम हिलाते हैं लेकिन वे ज्यों ही चुनाव जीतकर कुर्सी में बैठते हैं, नौकरशाहों की नौकरी बजाने लगते हैं. भारत के नौकरशाह हमारे स्थायी शासक हैं. उनकी भाषा अंग्रेजी है. देश के कानून अंग्रेजी में बनते हैं, अदालतें अपने फैसले अंग्रेजी में देती हैं, ऊंची पढ़ाई और शोध अंग्रेजी में होते हैं, अंग्रेजी के बिना आपको कोई ऊंची नौकरी नहीं मिल सकती. क्या हम हमारे नेताओं और सरकार से आशा करें कि हिंदी-दिवस पर उन्हें कुछ शर्म आएगी और अंग्रेजी के सार्वजनिक प्रयोग पर वे प्रतिबंध लगाएंगे? यह सराहनीय है कि नई शिक्षा नीति में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषाओं के माध्यम को लागू किया जाएगा लेकिन उच्चतम स्तरों से जब तक अंग्रेजी को विदा नहीं किया जाएगा, हिंदी की हैसियत नौकरानी की ही बनी रहेगी.

हिंदी-दिवस को सार्थक बनाने के लिए अंग्रेजी के सार्वजनिक प्रयोग पर प्रतिबंध की जरुरत क्यों है? इसलिए नहीं कि हमें अंग्रेजी से नफरत है. कोई मूर्ख ही होगा जो किसी विदेशी भाषा या अंग्रेजी से नफरत करेगा. कोई स्वेच्छा से जितनी भी विदेशी भाषाएं पढ़ें, उतना ही अच्छा! मैंने अंग्रेजी के अलावा रुसी, जर्मन और फारसी पढ़ी लेकिन अपना अंतरराष्ट्रीय राजनीति का पीएच.डी. का शोधग्रंथ हिंदी में लिखा. 55 साल पहले देश में हंगामा हो गया. संसद ठप्प हो गई, क्योंकि दिमागी गुलामी का माहौल फैला हुआ था. आज भी वही हाल है. इस हाल को बदलें कैसे?

हिंदी-दिवस को सारा देश अंग्रेजी-हटाओ दिवस के तौर पर मनाए! अंग्रेजी मिटाओ नहीं, सिर्फ हटाओ! अंग्रेजी की अनिवार्यता हर जगह से हटाएं. उन सब स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों की मान्यता खत्म की जाए, जो अंग्रेजी माध्यम से कोई भी विषय पढ़ाते हैं. संसद और विधानसभाओं में जो भी अंग्रेजी बोले, उसे कम से कम छह माह के लिए मुअत्तिल किया जाए. यह मैं नहीं कह रहा हूं. यह महात्मा गांधी ने कहा था.

सारे कानून हिंदी और लोकभाषाओं में बनें और अदालती बहस और फैसले भी उन्हीं भाषाओं में हों. अंग्रेजी के टीवी चौनल और दैनिक अखबारों पर प्रतिबंध हो. विदेशियों के लिए केवल एक चैनल और एक अखबार विदेशी भाषा में हो सकता है. किसी भी नौकरी के लिए अंग्रेजी अनिवार्य न हो. हर विश्वविद्यालय में दुनिया की प्रमुख विदेशी भाषाओं को सिखाने का प्रबंध हो ताकि हमारे लोग कूटनीति, विदेश व्यापार और शोध के मामले में पारंगत हों. देश का हर नागरिक प्रतिज्ञा करे कि वह अपने हस्ताक्षर स्वभाषा या हिंदी में करेगा तथा एक अन्य भारतीय भाषा जरुर सीखेगा. हम अपना रोजमर्रा का काम-काज हिंदी या स्वभाषाओं में करें. भारत में जब तक अंग्रेजी का बोलबाला रहेगा याने अंग्रेजी महारानी बनी रहेगी तब तक आपकी हिंदी नौकरानी ही बनी रहेगी.

कुछ लोग अंग्रेजी को अनिवार्य बनाने के पक्ष में यह तर्क देते हैं कि वह विश्व-भाषा है. विश्व-भाषा का विरोध करना अपने आप को संकुचित करना है. यह तर्क गलत है. हम अंग्रेजी का

विरोध नहीं कर रहे हैं. उसकी अनिवार्यता, उसके थोपे जाने का, उसके अनावश्यक वर्चस्व का विरोध कर रहे हैं. यदि वही विश्व-भाषा है तो हमें बताइए कि संयुक्त राष्ट्र संघ, जो विश्व का सबसे बड़ा संगठन है, उसकी एकमात्र भाषा अंग्रेजी क्यों नहीं है? इस विश्व संगठन की भाषा तो इस तथाकथित विश्व-भाषा को ही होना चाहिए था. लेकिन संयुक्तराष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं की संख्या 6 है, सिर्फ 1 नहीं. उसकी भाषाएं हैं- अरबी, चीनी, रुसी, फ्रांसीसी, अंग्रेजी और हिस्पानी. इनमें से प्रत्येक भाषा के बोलने वालों से कहीं ज्यादा संख्या हिंदी बोलने और समझने वालों की है. चीनीभाषियों से भी ज्यादा. 1999 में जब संयुक्तराष्ट्र संघ में भारतीय प्रतिनिधि के तौर पर मेरा भाषण हुआ था तब मैंने हिंदी में बोलने की कोशिश की थी. अटलबिहारी वाजपेयी सरकार ने हिंदी को भी संयुक्तराष्ट्र संघ की भाषा बनाने की पहल की थी. इस कोशिश को मोदी सरकार अंजाम नहीं देगी तो कौन देगा?

जहां तक भाषा के तौर पर अंग्रेजी की समृद्धता का सवाल है, मेरा निवेदन है कि उसकी लिपि, उसका व्याकरण, उसका उच्चारण उसके पर्यायवाची शब्द हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के मुकाबले आज भी बहुत पिछड़े हुए हैं. हिंदी तो संस्कृत की पुत्री है और दर्जनों भारतीय भाषाएं उसकी बहने हैं. संस्कृत की एक धातु में पाणिनी ने लगभग दो हजार धातुओं का उल्लेख किया है. एक धातु में प्रत्यय, उपसर्ग, वचन, पुरुष, लिंग, विभक्तियां आदि लगाकर लाखों शब्द बना सकते हैं. हिंदी ने संस्कृत, प्राकृत, पाली, अरबी, फारसी, यूनानी, मिस्री, पुर्तगाली और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द ऐसे और इतने हजम कर लिये हैं कि उसका शब्द-कोश अंग्रेजी के शब्द-कोश से कई गुना बड़ा है. अंग्रेजी भाषा के विचित्र व्याकरण और अटपटी लिपि को सुधारने के लिए महान ब्रिटिश साहित्यकार बर्नार्ड शा ने एक न्यास भी बनाया था.

अंग्रेजी दुनिया के सिर्फ चाढ़े चार देशों की भाषा है. आधा कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया या फिर वह भारत और पाकिस्तान- जैसे पूर्व-गुलाम देशों (कॉमनवेल्थ) में चलती है. मैं दुनिया के 80—90 देशों में जाकर देख चुका हूं. उनकी सरकार, संसद, अदालत और ऊंची पढ़ाई में वे अपनी भाषा ही चलाते हैं. दुनिया का कोई भी महाशक्ति राष्ट्र विदेशी भाषा के जरिए आगे नहीं बढ़ा है. यदि भारत को महाशक्ति और महासंपन्न बनना है तो उसे अपने देश से अंग्रेजी के वर्चस्व को खत्म करना होगा और सब कामों में स्वभाषाओं को बढ़ाना होगा.

# केन्द्रीय बजट-2021 एक आईने में

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वित्त वर्ष 2021—22 का बजट पेश कर दिया. कोविड19 महामारी के बीच आया बजट 2021 इस बात के साफ संकेत दे गया कि 'स्वस्थ भारत' और 'मजबूत बुनियाद' पर ही देश आगे बढ़ेगा. अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने के लिए खर्च करना ही है, सरकार ने जिस तरह राजकोषीय घाटे का लक्ष्य निर्धारित किया है, उससे यह बात साफ है. वित्त मंत्री के बजट में ऐसा कोई नया टैक्स नहीं लगाया जिसका निवेशकों, कारोबारियों या करदाताओं पर नकारात्मक असर हो. यही वजह रही कि शेयर बाजार भी बम-बम करता नजर आया और निवेशकों की दौलत एक ही दिन में 6.8 लाख करोड़ रुपये बढ़ गई. वित्त मंत्री ने फार्म क्रेडिट लिमिट को 16.5 लाख करोड़ रुपये करके किसानों को एक अहम संदेश देने की पहल की. हालांकि, वेतनभोगी करदाताओं का इंतजार एक साल और बढ़ गया.

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2021—22 के लिए कुल 34,83,236 करोड़ रुपये के व्यय का बजट पेश किया है. यह चालू वित्त वर्ष के संशोधित अनुमान 34,50,305 करोड़ रुपये से थोड़ा ही अधिक है. इसमें पूंजी व्यय 5,54,236 करोड़ रुपये है, जो 2020—21 के संशोधित अनुमान 4,39,163 करोड़ रुपये से कहीं अधिक है. बजट दस्तावेज के मुताबिक, राजस्व खाते पर व्यय 29,29,000 करोड़ रुपये अनुमानित है जबकि 2020—21 के संशोधित अनुमान के अनुसार खर्च 30,111,42 करोड़ रुपये दिखाया गया है.

वित्त मंत्री ने बजट में 6 पिलर्स के नाम, स्वास्थ्य और कल्याण, भौतिक और वित्तीय पूंजी, और अवसंरचना, आकांक्षी भारत के लिए समावेशी विकास, मानव पूंजी में नवजीवन का संचार करना, नवप्रवर्तन और अनुसंधान एवं विकास और न्यूनतम सरकार और अधिकतम शासन, गिनाए. बजट में आयकर दाताओं को बजट में किसी भी तरह अहम राहत का एलान नहीं किया गया है. इनकम टैक्स स्लैब में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया गया है. हालांकि, वरिष्ठ नागरिक जो 75 साल से अधिक हैं और उनकी पेंशन व जमा से आय है तो उनकी इनकम टैक्स रिटर्न से छूट देने का एलान किया.

# मानवीय-चेतना के अभ्यासी और हिंदी के पुरोधा संत विनोबा भावे

**वे आजीवन भारत के शाश्वत और सार्वभौम महत्व के विचारों को सहज रूप में सबसे साझा करते रहे. भूदान के लिए पूरे देश में पद यात्रा की और गरीबों के लिए व्यापक स्तर पर भूमि का प्रबंध किया.**

**विनोबा जी अपनी सोच के अनुसार कार्य कर पाने की चुनौती को बड़ी सहजता से कर दिखाया था. विनोबा जी अपनी सीमा भी पहचानते थे.**

-गिरीश्वर मिश्र

(पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय)

एक ओर दुःस्वप्न जैसा कठोर यथार्थ और दूसरी ओर कोमल आत्म-विचार! दोनों को साथ ले कर दृढ़ता पूर्वक चलते हुए अनासक्त भाव से जीवन के यथार्थ से जूझने को कोई सदा तत्पर रहे यह आज के जमाने में कल्पनातीत ही लगता है. परंतु 'संत' और 'बाबा' के नाम से प्रसिद्ध भारतीय स्वातंर्त्य की गांधी-यात्रा के अनोखे सहभागी शांति के अग्रदूत श्री बिनोवा भावे की यही एक व्याख्या हो सकती है. वे मूलतः एक देशज चिंतक थे जिन्होंने स्वाध्याय और स्वानुभव के आधार पर अपने विचारों का निर्माण किया था. उनका गहरा सरोकार अध्यात्म से था पर उनका अध्यात्म जीवंत और लोक-जीवन से जुड़ा था. वे अपनी अध्ययन-यात्रा के दौरान विभिन्न धर्म-परम्पराओं के सिद्धांतों और अभ्यासों से परिचित होते रहे. अनेक भाषाएँ सीखीं और साधारण जीवन का अभ्यास किया. उनकी अविचल निष्ठा लौकिक धर्मों और उनके अनुष्ठानों से ऊपर उठ कर निखालिस मानुष सत्य के प्रति थी जिसकी उन्होने न केवल पहचान की बल्कि बहुत हद तक खुद अपने जीवन में उतार भी सके थे. वे आजीवन भारत के शाश्वत और सार्वभौम महत्व के विचारों को सहज रूप में सबसे साझा करते रहे. 'जय जगत' ही उनका नारा था. भूदान के लिए पूरे देश में पद यात्रा की और गरीबों के लिए व्यापक स्तर पर भूमि का प्रबंध किया और तो और यह सब करने का आधार भी हृदय-परिवर्तन था न कि कोई जोर जबर्दस्ती.

सोचना और सोच के अनुसार कार्य कर पाना जीवन की बड़ी चुनौती है और इस महापुरुष ने बड़ी सहजता से ऐसा कर दिखाया था. विनोबा जी अपनी सीमा भी पहचानते थे. बड़ी सादगी से गहरे सच को आत्मसात कर व्यवहार में लाने की हिम्मत और साहस के लिए प्रलोभनों के आकर्षण से बचना बेहद जरूरी है. विनोबा जी ने इसे अपने जीवन में बखूबी साधा था. उनका स्वानुभूत विचार था कि सत्य का ज्ञान सदा अपर्याप्त होगा. जाना जा रहा सत्य सदा अधूरा यानी अनंतिम ही होगा. यहीं पर वह अध्यात्म और विज्ञान को एक धरातल पर खड़ा देखते हैं. वह एक विरक्त सन्यासी की दृष्टि से व्यक्तिगत आध्यात्मवाद को स्वार्थ का ही एक रूप पाते हैं और सामूहिक साधना की बात को आगे बढाते हैं. स्वावलंबन और सहकार के वे पक्षधर थे. वे बार-बार चेताते रहते हैं कि व्यक्ति का निजी मन बांधता है और सामूहिक साधना में विघ्न-बाधायें आती है.

विनोबा जी सभी प्रचलित धर्मों के आधार की ईमानदारी से तलाश करते हुए सबमें व्याप्त एक मौलिक एकता पाते हैं. वे सभी धर्मों कि ओर तटस्थ बुद्धि से देखते थे. उनके प्रिय विचार हैं साम्य योग, समन्वय, सर्वोदय और सत्याग्रह. ये सब मिल कर उनके प्रिय जीवन-सूत्र को आकार देते हैं. वे आध्यात्मिक पंच निष्ठा की बात करते हैं. ये निष्ठाएँ हैं : निरपेक्ष नैतिक मूल्यों में श्रद्धा, सभी प्राणियों में एकता और पवित्रता, मृत्यु के उपरांत जीवन की अखंडता, कर्म विपाक और समस्त विश्व में व्यवस्था की उपस्थिति की अवधारणा. वे खुले शब्दों में घोषणा करते हैं कि मनुष्य के आचरण की कसौटी यह है कि समष्टि के लिए वह किस हद तक उपयोगी साबित हो पाता है. वे अर्थ-शुचित्व (धन-संपत्ति कि पवित्रता) पर बहुत बल देते थे. यानी व्यवहार में अस्तेय (चोरी न करना) और अपरिग्रह (अपने लिए आवश्यकता से अधिक चीजों को न इकट्ठा करना) पर बल देते हैं. पर वे यह भी कहते हैं कि इनकी उपलब्धि सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलने पर ही

मिल सकती है. उनके विचार में अर्थ-शुचित्व की पद्धति या मार्ग अस्तेय के पालन में है और उसकी मात्रा अपरिग्रह द्वारा निर्धारित होती है. वे स्पष्ट रूप से यह कहते हैं कि संपत्ति मनुष्य के नैतिक-आध्यात्मिक विकास के मार्ग में रोड़ा है. वे उत्पादन की प्रक्रिया को बड़ा महत्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि वह सभी की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, रोजगार और आत्मिक विकास में सहायक होती है. विनोबा जी ने जीवन शैली और अर्थ नीति के बीच गहरा रिश्ता पहचाना था और उनका निदान बहुत हद तक सही भी प्रतीत होता है. उनका विचार है कि स्वस्थ जीवन के लिए जरूरी वस्तुएं तो प्रचुर मात्र में होनी चाहिए परन्तु निरर्थक वस्तुओं का उत्पादन और संग्रह कदापि नहीं होना चाहिए. लोभ और संग्रह सुख शांति के सबसे बड़े शत्रु हैं. वह अनावश्यक वस्तुओं को जीवन में एकत्र करने के सख्त खिलाफ हैं. उनकी दृष्टि में कृत्रिम जरूरतों के लिए उत्पादन करते रहने से मात्र पर्यावरण-प्रदूषण और पारिस्थितिकीय असंतुलन ही पैदा होता है. उनकी सोच आज का एक कटु यथार्थ है. आज देश के छोटे बड़े सभी शहर अनियंत्रित मात्रा में पैदा हो रहे कूड़े-कचरे के निस्तारण की विकट समस्या से जूझ रहे हैं. विनोबा जी यह भी मानते थे कि ऐसे अपरिग्रही उत्पादन से मनुष्य की स्वाभाविक क्षमताएं भी घटती जाती हैं. ऐसे में वर्तमान में चालू व्यवस्था के उद्देश्यों और प्रक्रियाओं के सामने गंभीर सवाल खड़े होते हैं जिन पर विचार करना जरूरी हो जाता है. यदि स्थानीय उत्पादन हो और वह अहिंसक प्रकृति का हो तो वह पूंजी का शोषणपरक केन्द्रीकरण नहीं होने देता है. साथ ही होने वाले लाभ के समान वितरण से समाज में आर्थिक साम्य आता है. योग, उद्योग और सहयोग साथ-साथ चलते हैं. विनोबा जी कांचन-मुक्ति की कामना कर रहे थे और समाज में श्रम कि प्रतिष्ठा पर बल दे रहे थे. वह श्रम-मुद्रा कि प्रतिष्ठा चाहते थे. शरीर का पोषण शरीर के कार्य से जुड़ा हुआ है और उसके आगे शरीर को सजाना निरर्थक ही होता है. शरीर कारी करते रहने यानी पुरुषार्थी बनने से सामाजिक-आर्थिक शोषण का भी समाधान मिलेगा. इस दृष्टि से समाज में सबके साथ एकरूपता होनी चाहिए. अतः शिक्षा को एकांगी न हो कर वाणी, मन, देह, बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियों आदि सबके विकास का माध्यम होना चाहिए. सत्य, प्रेम और करुणा ही वे मूल्य हैं जिनकी स्थापना से समाज की उन्नति संभाव हो सकेगी.

विनोबा जी मानते हैं कि मानव चेतना के भविष्य में हिंसा को कोई स्थान नहीं है. वे हिंसाहीन मानव चेतना को संभव मानते हैं. मानव स्वभाव विकसनशील है क्योंकि मनुष्य आत्म चेतन प्राणी है जो अपना नियमन और नियंत्रण कर सक्ने में सक्षम है. इसलिए यह संभव है कि वह अपने परिवर्तन में हस्तक्षेप करे. विनोबा जी के अनुसार समाज के नैतिक स्तर ऊपर उठने के साथ समाज में शासन की जरूरत भी कम होती जायगी. विकेन्द्रीकरण कि प्रक्रिया शासन से मुक्ति की ओर ले जाती है. विनोबा जी कि संकल्पना थी कि सर्वोदय अपने श्रेष्ठ रूप में शासन मुक्त होगा. वे स्वराज्य को गाँव के स्तर पर भी लाने के हिमायती थे.

आदर्श और मूल्यों के लिए समर्पित विनोबा जी कहते हैं सम्यक आचरण, सम्यक वाणी और सम्यक विचार से समझाना ही सत्याग्रह है. वे किसी भी तरह के दबाव के पक्ष में नहीं थे. वे सोच रहे थे कि परिपक्वता आने के साथ आत्मज्ञान और विज्ञान के तत्व धर्म और राजनीति का स्थान ले लेंगे. सत्य ग्राही होने से ही व्यक्ति सत्याग्रही बनाता है. वे 'एकं सत' को मानते हुए समन्वय द्वारा विविधता में एकता यानी साम्य लाने कि कोशिश में लगे थे. तभी उनके लिए सभी धर्मों की ओर तटस्थ भाव से देख पाना भी संभव हो सका था. उनके विचारों में बहुत कुछ है जो हमें आलोकित करता चलता है. निष्काम कर्मयोगियों में अग्रणी विनोबा जी अपने जीवन में ज्ञान और कर्म को साधने तथा उनके बीच उत्पादक सामंजस्य बैठाने की सतत कोशिश करते रहे. ईश्वर-प्रणिधान और आध्यात्मिक जीवन को अपने निजी अनुभव में लाते हए विनोबा जी ने साधु-जीवन जिया और समत्व योग में अवस्थित रहे. उनके कर्म अकर्म रहे. उनके सांसारिक कार्य भी प्रेरणा और विस्तार में विराट सत्ता से जुड़ने और जोड़ने के प्रयास ही थे. 'जय जगत' की उनकी कामना समस्त प्राणियों की पीड़ा को जांने और दूर करने की तीव्र आकांक्षा से अनुप्राणित थी.

स्वयंसिद्ध विनोबा ने अपने यत्न से 'सन्त विनोबा' का आविष्कार किया था. उन्होंने अपने को धुँध से उबारा और ढूँढा. यह उनका सत्य के प्रति तीव्र आग्रह और मिथ्या के अंधकार का असंदिग्ध विरोध ही था जो उन्हें आजीवन दृढ़ व्रती बनाए रखा. विनोबा अविचल निष्ठा से संयत साधना का पर्याय सा बन गया.

गीता और उपनिषद के साथ कुरान और बाइबिल के साथ अनेक भाषाओं और लिपियों को समझने की उनकी अनथक कोशिश बिनोबा जी को मानव

सभ्यता का एक चिर जिज्ञासु बना देती है. मानव धर्म की अनुभूति को उन्होंने जीवन शैली में प्रतिष्ठित किया. 'श्रम' की अवधारणा को जीवन-श्रोत के रूप में देखा और पूँजीवादी उत्पादन प्रधान तथा नफे की ओर अग्रसर अर्थव्यवस्था का विकल्प उपस्थित किया. गीता की स्थितप्रज्ञ की अवधारणा को जीते हुए वे सुख दुःख से अप्रभावित, निर्मम और निरहंकार के भाव से अपने युग की बलवती हो रही असम्यक धाराओं से टकराते हुए अविचल बने रहे.

आज की सतही, छिछली और अर्थहीन जिंदगी में अंतस तक पहुँचना कठिन से कठिनतर हुआ जा रहा है. अशांति की उछाल और कुंठित कोलाहल के बीच आज का मनुष्य उपलब्धि और तृप्ति की तलाश में दर-दर भटक रहा है और मार्ग नहीं मिल रहा है. नैतिक अनैतिक आशाओं और आकांक्षाओं के अनगिनत द्वन्द हम सबको दिन रात जोड़-तोड़ में ही बझाए रखते हैं. अधिकाधिक संग्रह और भोग-विलास में समाधान ढूढने की हमारी प्रवृत्ति असंतोष को ही जन्म दे रही है. ऐसे में हम मानसिक सुख शांति से कोसों दूर हम तनावग्रस्त होते जा रहे हैं. पात्र आपात्र की चिंता छोड़ हम सब अवांछित लोभ को ही अपनी प्रगति और उन्नति का पैमाना मान रहे हैं. आज के आदमी को कुछ क्षण ठहर स्वयं से मिलने और आत्म-साक्षात्कार का भी अवकाश नहीं मिलता है. फलतः उद्विग्न और व्यग्र हो कर वह अपना वास्तविक आधार खोता जा रहा है. इस अशांत मनुष्य को सुख नहीं मिल पा रहा है.

विनोबा जी का लेखन और कर्म हमें अपने मूल स्वभाव की ओर ले जाता है. वह हमें अपने वास्तविक स्वरूप का अभिज्ञान या पहचान करवाने में मदद करता है कि हम कोई छुद्र, सारहीन और सत्वहीन पदार्थ नहीं हैं. हम परमात्मा की विराट सत्ता के प्रसाद से भावित जीव हैं और समस्त जगत और जीवन से जुड़े भी हैं. इस अर्थ में संसारी होना आध्यात्म का अविरोधी है. आखिर अपने मूल स्वभाव में लौटना ही तो आध्यात्म है.

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः

# सांस्कारिक पतन के जिम्मेदार....

**बोली यूँ बाप से माँ डाँटो न हद से ज्यादा**
**फर्जन्द के जहन से कहीं डर निकल ही जाए**

मेरे इस शेर में साफ जाहिर हो रहा है कि अब वो समय नहीं रहा जब बच्चों को डांट-डपट के बात मनवाई जा सक. अधिक जबरदस्ती की गयी तो हो सकता है बच्चा हाथ से निकल जाए या फिर आपको ही कुछ बुरा-भला सुनने को मिल जाए.

संस्कार की बात जरा पुरानी-सी लगती है. जब आँख का इशारा ही काफी होता था बात समझने-समझाने के लिए. जैसे-जैसे संयुक्त परिवार समाप्ति की ओर जा रहे हैं वैसे-वैसे ही बड़ों-छोटों के आपसी प्रेम व्यवहार, साझा करने की आदत और मान-सम्मान की परम्पराएं भी लुप्त होती नजर आ रही हैं.

लिखने-कहने को बहुत कुछ है क्यूंकि किसी बदलाव के वृक्ष की जड़ें कहाँ तक फैलीं हैं वो तो जमीन को कुरेदने के बाद ही जाना जा सकता है परन्तु इस लेख के सीमित परिपेक्ष में मैं कुछ ही बातें उद्धरित करना चाहूंगी.

दरअसल, आज हम बच्चों को गुस्सैल, उखड़ और संवेदना-शून्यमान कर उन्हें ही दोषी नहीं कह सकते क्योंकि ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती. गलती कहें या कमी, हमारी यानी बड़ों की भी रही होगी जो आज सांस्कारिक पतन देखने को मिल रहा है. सामाजिक कुरीतियां यथा छेड़-छाड़, बलात्कार, कत्ल और वृद्धाश्रमों की संख्या उत्थान पर हैं और इनके निराकरण के लिए हमे ही आगे आना होगा. बच्चों- बेटों-बेटियों को जरूरी स्कूली-शिक्षा के साथ-साथ घर पर भी नैतिक शिक्षा देना अति आवष्यक है.

न अत्यधिक बंधन और न ही खुली छूट बच्चों के लिए हितकारी है. शुरू के 10—12 वर्ष जीवन का वह काल होता है जब हम बच्चों को प्रभावित कर सकते हैं. उसके बाद उनकी आदतें बदलना आसान नहीं होता. तो यह जरूरी हो जाता है कि सीमित यानी छोटे परिवारों में, जहाँ माता-पिता दोनों ही कामकाजी हैं या काम काजी नहीं भी है पर अत्यधिक व्यस्त हैं, माता-पिता दोनों को अपनी परेशानियों, काम-काज में से समय निकालना होगा. बच्चों के साथ समय बिताने की चेष्टा करनी होगी और अपनी निगरानी में उनमे संस्कार रोपित करने होंगे. सच बोलना, बड़ों का आदर करना, विपरीत सेक्स के प्रति संवेदनशील होना, एक-दूसरे की जरूरतों का खयाल रखना, बाँट कर खाना, इत्यादि नैतिक बातें बच्चों को माँ-बाप ही दे सकते हैं और देनी भी चाहिए ताकि आज के बच्चे भविष्य में बेहतर इंसान और नागरिक बन सकें.

**विद्यावाचस्पति पूनम माटिया,** नई दिल्ली

# आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन की समस्या

**आदिकालीन हिन्दी भाषा एवं साहित्य की सरिता उत्तर-वैदिक, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश के मार्ग से प्रवाहमान होते हुए तथा उनके लवण, खनिज को समेटते हुए अंत में हिन्दी के रूप में सुस्थापित हुई.**

-नरेन्द्र भूषण
जानकीपुरम, लखनऊ

आज का हिन्दी साहित्य जो हम पाते हैं उसके पूर्वज हमारे आदिकालीन साहित्य हैं. पूर्वज-साहित्य ने उत्तरवर्ती साहित्य को अकूत साहित्यिक सम्पदा प्रदान किया है. उसने हमें साहित्यिक संस्कार दिये, साहित्यिक अनुभव दिये, छन्द विधान, व्याकरण, शिल्प-सौष्ठव से परिचित कराया. पुरातन साहित्य ने आगत साहित्य का पथ प्रशस्त किया तथा भावी पीढ़ी को सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक मार्गदर्शन प्रदान किया. हम भलीभाँति अवगत हैं कि आज के कवियों, लेखकों में बड़ी संख्या में ऐसे भी साहित्यकार हैं जिन्हाने छात्र जीवन में हिन्दी साहित्य एक विषय के रूप में नहीं पढ़ा है परन्तु वे उत्कृष्ट सृजन कर रहे हैं. ऐसे साहित्यकारों को आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन में आने वाली समस्याओं से संक्षेप में परिचित कराना मात्र ही लेखक का प्रयोजन है.

साहित्य मानव समाज के विविध भावों एवं चेतना की अभिव्यक्ति है. किसी काल विशेष के साहित्य से तद्र्युगीन मानव समाज को समग्रतः जाना जा सकता है. मानव जीवन के परिष्कृत होते रहने के साथ-साथ अभिव्यक्ति हेतु शब्दों का उपयोग होने लगा. कालान्तर में शब्दों का पहले अलिखित फिर लिखित मानकीकरण हुआ. हिन्दी साहित्य के आदि काल की चर्चा करें तो यह पायेंगे कि इसके बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है. हिन्दी भाषा के परम विद्वान डॉ० हरदेव बाहरी के अनुसार हिन्दी की साहित्य-सरिता का प्राकट्य वैदिक काल में ही हो गया था. यदि इस विचार को मानें तो यह कह सकते हैं कि आदिकालीन हिन्दी भाषा एवं साहित्य की सरिता उत्तर-वैदिक, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश के मार्ग से प्रवाहमान होते हुए तथा उनके लवण, खनिज को समेटते हुए अंत में हिन्दी के रूप में सुस्थापित हुई. साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन करने के लिए उस साहित्य में प्रवाहित साहित्य-धाराओं तथा विविध प्रवृत्तियों के आधार पर विभाजन उपयुक्त होता है. युग के समसामयिक दर्शन एवं मान्यताओं के अनुकूल विषयगत तथा शैलीगत प्रवृत्तियाँ परिवर्तित होती रहती हैं. हिन्दी साहित्य के लिए भी यही बात लागू होती है. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' पुस्तक के लेखक आचार्य राम चन्द्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी साहित्य का प्रादुर्भाव 1050 ई० में हुआ. हिन्दी साहित्य का आदिकाल राजनीतिक दृष्टि से युद्ध और अशान्ति का काल था, अनेक प्रकार के मत-मतांतरों का अस्तित्व था. राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियों के कारण समाज में विश्रृंखलता आ गयी थी. हिन्दी के शोधकर्ता भाषाविज्ञानियों, विद्वानों के मतवैभिन्य के कारण हिन्दी के आदिकालीन साहित्य के अध्ययन में समस्या तथा दुविधा उत्पन्न होती है. इन समस्याओं को उनकी प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत करने पर अनेक विमर्श उत्पन्न होते हैं. इन्हे संक्षेप में निम्नवत व्यक्त किया जा सकता हैः-

**रचनाओं की प्रवृत्ति में विविधताः** आदिकाल के साहित्य में रचनावैविध्य मिलता है. इस काल में एक ओर जहाँ आध्यात्मिकविमर्श का साहित्य सृजन हुआ, वहीं श्रैंगारिक तथा वीरतत्व से संबंधित साहित्य भी प्रचुर मात्रा में लिखा गया. भक्ति, योग,भोग,नीति की भी रचनाएँ हुईं. दीर्घ काल-खण्ड में विविध प्रवृत्ति की रचनाओं के सृजन के कारण उनके व्यवस्थित अध्ययन में कठिनाई उत्पन्न होती है.

**आदि काल का काल-परिसीमनः** जिस काल खण्ड में एक विशेष ढंग की रचनाएँ अधिक मिलीं, उसे एक अलग कालखण्ड माना गया और रचनाओं की प्रचुरता के आधार पर प्रधान प्रवृत्ति का निर्धारण कर लिया गया. प्रधान प्रवृत्ति के लिए लोक प्रसिद्ध ग्रंथों को आधार बनाया गया. विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से तत्कालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति के संबंध में अपनी अवधारणा विनिश्चित करते हुए आदिकाल का काल-निर्धारण किया परन्तु अंततोगत्वा आचार्य राम चन्द्र शुक्ल का काल-विभाजन ही सामान्य प्रचलन में निम्नवत स्वीकार्य हुआ-

आदि काल (वीरगाथा काल) संवत् 1050—1375, पूर्व मध्य काल(भक्ति काल) संवत् 1375—1700, उत्तर मध्य काल(रीति काल)संवत् 1700—1900, आधुनिक काल(गद्य काल) संवत् 1900—अब तक

जहाँ तक आदि काल के परिसीमा की बात है, इसके लिए विभिन्न प्रमुख विद्वानों द्वारा इसके काल-खण्ड का निर्धारण अपने-अपने दृष्टिकोण से निम्नवत किया गया है-

रामचन्द्र शुक्ल-1050—1375, रामकुमार वर्मा-750—1375, राहुल सांकृत्यायन-760—1300, गणपति चन्द्र गुप्त-1184—1355, जार्ज ग्रियर्सन-700—1400, मिश्र बंधु - 700—1440, शिवकुमार वर्मा-1184—1318, नगेन्द्र-769—1418 सम्वत

इस प्रकार आदि काल की परिसीमा सुस्पष्ट न होने के कारण इस काल के साहित्य के सुव्यवस्थित अध्ययन में कठिनाई आती है.

**आदि काल का नामकरणः** अलग-अलग विद्वानों ने अपने अध‍ययन के आधार पर नामकरण निम्नवत किया-वीरगाथा कालः आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने निम्नलिखित पुस्तकों को आध‍ार बनाते हुए इसे वीरगाथा काल नाम दिया-विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, बीसलदेव रासो, खुमाण रासो, पृथ्वीराज रासो कीर्तिलता, कीर्ति पताका, विद्यापति पदावली, जयचंद्र प्रकाश, जयमयंक जसचंद्रिका, परमाल रासो, खुसरो की पहेलियाँ. इनमें से विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, कीर्तिलता, कीर्ति पताका अपभ्रंश की रचनाएँ हैं.

बाबू श्याम सुंदर दास जी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मत के समर्थन में थे.

**शेष पृष्ठ 15 पर....**

# अगर आप कुछ तोड़ना ही चाहते हैं, तो अपना पुराना रिकार्ड तोड़ें

संसार में बहुत से लोग गुस्सा करते हैं. पहले बड़ी बातों पर, और फिर छोटी-छोटी बातों पर भी गुस्सा करने लगते हैं. इस तरह से जब गुस्से पर नियंत्रण नहीं रहता, तो अपना गुस्सा दूर करने के लिए फिर वे सामान की तोड़फोड़ शुरू करते हैं. मैंने सुना है विदेशों में लोग अपना गुस्सा उतारने के लिए ऐसे स्थानों पर जाते हैं, जहां उनको फर्नीचर आदि वस्तुएं रखी हुई मिलती हैं और वे पैसा देकर उस सामान को तोड़ते हैं. सामान तोड़ने से उनका गुस्सा बाहर निकल जाता है, मन थोड़ा शांत हो जाता है. सामान की तोड़फोड़ करना, यह तो अच्छी स्थिति नहीं है.

आयुर्वेद में क्रोध को मानसिक रोग के नाम से जाना जाता है. इस रोग का विधिवत् इलाज कराना चाहिए. क्रोध को दूर करने का यह तरीका नहीं है कि आप सामान तोड़ें. यह विनाश का कार्य है. यदि किसी व्यक्ति को गुस्सा आता ही है और वह अपना गुस्सा दूर करना चाहता है, तो इससे विनाश का रूप बदलकर निर्माण कार्य भी किया जा सकता है. उदाहरण के लिए, मान लीजिए, एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के साथ कुछ द्वेष हो गया. दोनों ही खिलाड़ी थे. एक खिलाड़ी को दूसरे खिलाड़ी पर गुस्सा आने लगा, क्योंकि वह उससे योग्यता में आगे जा रहा था. यदि वह अपने गुस्से को दूर करना चाहता है, तो वह दूसरे खिलाड़ी की टांग न खींचे. उसका कोई नुकसान न करे. बल्कि अपनी खेल की कलाकारी योग्यता को बढ़ाए. उस गुस्से को इस तरह मोड़ दे कि 'मैं खूब मेहनत करूंगा और आगे बढ़ूंगा. मैं भी ऊंची योग्यता बनाऊंगा.' यदि वह दूसरे खिलाड़ी से प्रतियोगिता करेगा और प्रतियोगिता में वह हार गया, तो उसे फिर गुस्सा आएगा. और उसके गुस्से का इलाज नहीं हो पाएगा. इसलिए उसकी अपेक्षा उसे ऐसा सोचना चाहिए कि 'हर व्यक्ति अपना कर्म करने में स्वतंत्र है. वह खिलाड़ी भी स्वतंत्र है, मैं भी स्वतंत्र हूं. वह अपनी मेहनत करता है, मैं भी अपनी मेहनत करूंगा और आगे बढ़ूंगा. मैं उसके साथ द्वेष नहीं करूंगा. मैं अपनी उन्नति पर ध्यान दूंगा.'

तो सारी बात का सार यह हुआ कि, जो व्यक्ति क्रोध को दूर करना चाहता है, वह खूब मेहनत करे, और अपना पिछला रिकार्ड देखे कि 'मैंने पहले कहां तक प्रगति की थी. अब मैं और मेहनत करूंगा, और अपने ही रिकार्ड को तोड़कर उसके ऊपर निकलूंगा.' इस तरह के चिंतन और पुरुषार्थ से वह क्रोध वाला व्यक्ति अपने क्रोध को जीत लेगा. और अपना ही पिछला रिकार्ड तोड़ कर आगे बढ़ने से उसकी उन्नति होगी. ऐसा करने से उसका क्रोध विनाशक नहीं रहेगा, बल्कि निर्माण कार्य में परिवर्तित हो जाएगा.' इस प्रकार से अपना ही पिछला रिकार्ड तोड़ कर, अपना गुस्सा उतारना चाहिए. न कि किसी दूसरे का सर फोड़ कर, उसका घर सामान तोड़कर, या और कोई हानि करके गुस्सा उतारना. दूसरे का नुकसान करके अपना गुस्सा दूर करना, यह कोई वीरता नहीं है, और न ही यह मनुष्यता है.'

-स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

# ज्वलंत विषयों पर मीडिया की भूमिका

## शोषितों की आवाज उठाना महत्वपूर्ण या किसी सेलिब्रेटी की निजी जिदंगी का?

अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थॉमस जेफरसन ने कहा था–'यदि मुझे कभी यह निश्चित करने के लिए कहा या कि मीडिया और सरकार में से किसी एक को चुनना है तो मैं बिना हिचक कहूंगा कि सरकार चाहे न हो, लेकिन मीडिया का अस्तित्व अवश्य रहे.'

मीडिया में और विशेष तौर पर प्रिंट मीडिया में जनमत बनाने की अद्भुत शक्ति होती है. जब भी मीडिया और समाज की बात की जाती है तो मीडिया को समाज में जागरुकता पैदा करने वाले एक साधन के रुप में देखा जाता है.

अब सवाल यह उठता है कि मीडिया के लिए शोषितों की आवाज उठाना ज्यादा महत्वपूर्ण है अथवा क्रिकेट की रिर्पोटिंग करना, किसी सेलिब्रेटी की निजी जिदंगी?

समय के साथ मीडिया के स्वरुप और मिशन में काफी परिवर्तन हुआ है. अब ऐसी गंभीर मुद्दों के लिए मीडिया में जगह घटी है. उसे बस अपने टीआरपी की चिंता रहती है. आज समाज में हो रहे नित्य प्रतिदिन के कृत्यों को मीडिया में उछालने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना चाहिए. अपनी लोकप्रियता के लिए किसी की स्मिता से खेलवाड़ करने का अधिकार मीडिया को नहीं है.

ऐसी प्रवृत्तियां मीडिया की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े करती है. अपराध और अपराधीकरण को ग्लैमराइज्ड करना कहीं से भी उचित नहीं कहा जा सकता. खबरों को प्लांट करना भी हमारे सामने एक बड़ा खतरा है. हमारे रिश्ते दरअसल हिप्पोक्रेमी पर आधारित है. पुलिस छिपाती है और पत्रकार कुछ अलग छापते है. इसमें विश्वसनीयता का संकट बड़ा हो गया है. मीडिया के दुरुपयोग को आमिर खान ने अपनी फिल्म 'पीपली लाइव' में काफी करीब से दिखाया है.

आज के इस दौर में मीडिया को वास्तविक 'क्या है' और 'कैसे' का सही विश्लेषण के साथ अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी चाहिए.

आज का मीडिया अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति प्रतिबद्धता का वही तक निवर्हन करता है जहां तक उसके लाभांश पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता.

अंत में मैं मीडिया के प्रति यही कहूंगी शक्ति का तू स्रोत है, वाणी में तेरी ओज है.'

**–साक्षी श्रीवास्तव**
छात्रा, परास्नातक-हिन्दी,
पीआरएसयू, प्रयागराज, उ.प्र.

## मीडिया का सबसे महत्वपूर्ण योगदान ज्वलंत मुद्दों पर रहता है

इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े है जब मीडिया की शक्ति को पहचानते हुए लोगों ने इसका उपयोग लोक परिवर्तन के भरोसेमन्द हथियार के रुप में किया है. मीडिया का सबसे महत्वपूर्ण योगदान ज्वलंत मुद्दों पर रहता है, क्योंकि किसी भी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक महिला सशक्तिकरण आदि विषयों पर घटित किसी भी मुद्दे को जनसाधाररण से लेकर संसद तक पहुचाने का कार्य मीडिया ही करती है. बिना मीडिया के कोई भी मुद्दा देशव्यापी या विश्वव्यापी नहीं हो सकता है. मीडिया ही एक ऐसा माध्यम है जो किसी भी मुद्दे के तह तक जाकर उसकी खोजबीन करती है तथा उस मुद्दे की वास्तविकता को पहचान कर उसे जनसाधारण के बीच तक लाने का कार्य करती है. जब कोई मुद्दा ज्वलनशील विषयों या ऐसी घटनाओं पर आधारित हो जिस पर जनसाधारण से लेकर नीति निर्धारक संसद तक पहुंच जाये ऐसे मुद्दों पर मीडिया की भूमिका अहम हो जाती है. मीडिया ऐसे मुद्दों पर अपने विभिन्न माध्यमों से जनसधारण से लेकर नीति निर्धारक तक के मत को जानने का प्रयास करती है तथा इस मत को सभी के सामने प्रस्तुत करती है. भले ही आज की मीडिया से तब की मीडिया का स्वरुप भिन्न हो पर कार्य लगभग समान थे.

भारती की आजादी की लड़ाई में जितना योगदान स्वतन्त्रता सेनानियों का रहा है उतना ही योगदान ज्वलन्त मुद्दों को जनसामान्य तक पहुंचाकर उन्हें आजादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए प्रेरित करने के लिए मीडिया का भी योगदान रहा है.

उन्नाव, जम्मू कश्मीर में हैवानियत करने वालों को जेल तक पहुंचाने में मीडिया ने अहम भूमिका अदा की है. जिसके परिणामस्वरुप सरकार को आनन फानन में अध्यादेश लाना पड़ा.

कभी कभी मीडिया की भूमिका उत्तेजना घातक भी सिद्ध होती है. 26 नवम्बर 2008, मुम्बई की आतंकवादी घटना की लाइव कवरेज ने भारत की मीडिया खासकर टी.वी. चैनलों को

कटघड़े में खड़ा कर दिया. कभी कभी साधारण मुद्दों को भी टीआरपी बढ़ाने के लिए ज्वलन्त मुद्दा बना देते है. जबकी इसमें ऐसी कोई बात नहीं रहती. इससे बहुत सारे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक मुद्दे विलीन हो जाते है.

**-आलोक कुमार चौबे**

-परास्नातक छात्र, समाज कार्य, इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

## कहीं मीडिया का एजेंडा सरकारों द्वारा तो तय नहीं

मीडिया बर्हिसलिला भी और अन्तः सलिला भी. मीडिया जो दिखाती है, सुनाती है अथवा जो नहीं दिखाती या सुनाती वह भी अन्तर्प्रवाह की तरह अप्रच्छन्न रुप से सम्पूर्ण जनचेतना को कहीं न कहीं झकझोरती है, आन्दोलित करती है. मीडिया तुलसी और कबीर भी है.

मीडिया का कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक है. उसकी नज़र हर ओर रहती है, होनी भी चाहिए. जीवन के हर क्षेत्र, समाज की हर समस्या, समाज का हर तबका, हर वर्ग मीडिया के कार्यक्षेत्र और प्रभावक्षेत्र के दायरे में आ जाता है तो उसकी भूमिका भी बहुआयामी ही नहीं बहुगुणात्मक हो जाती है, होनी भी चाहिए.

मीडिया के पास संवाद, वाद-विवाद, साक्षात्कार, न्यूज चैनल, लिपिबद्ध समाचार आदि कई तरह के स्टिंग ऑपरेशन जैसा ब्रह्मास्त्र भी है समाज या राष्ट्र की कैसी भी सामयिक या ज्वलंत समस्याओं को उजागर और चाहे तो स्वयं उनका समाधान खोजने अथवा समाज या सत्ता को खोजने के लिए प्रेरित कर सकती है. किन्तु क्या आज की भारतीय मीडिया पूरी ईमानदारी और सजगता से अपनी महती भूमिका का निवर्हन कर रही हैं अथवा कर पा रही है-यह एक यक्ष प्रश्न है.

बहुत अच्छा लगता है जब हम बीबीसी समाचार, रजत शर्मा की आप अदालत, आज की बात, रबिश कुमार का प्राईम टाईम आदि में जब हम धर्माडम्बर, धर्म की आड़ में पनपते घिनौनेपन, सत्ताधारियों और सत्ताहीनों, धन कुबेरों के दोहरे चरित्र, भ्रष्टाचार और अनाचार की पोल खुलते देखते है. किन्तु बहुत ही निराशा और ग्लानि होती है जब तत्कालिक रुप से प्रायोजित समस्याओं के रुप में प्रस्तुत कर चटअखारे लेते हुए निम्नस्तर की लफ्फाजी को पक्ष विपक्ष के संवा के रुप में परोसा जाता है-जहां सिर्फ चीखने चिल्लाने और अपशब्दों का शोर होता है. ऐसी डिबेट्स और डिबेटर न सिर्फ अपने बौद्धिक दिवालिएपन और मर्यादा हीनता को उजागर करते हैं बल्कि देश की छवि भी धूमिल करते है. यही नहीं इस बीच ज्वलंत, मूल और अहम् मुद्दों को कहां-कब निगल जाते हैं किसी को पता तक नहीं चलता.

ज़ाहिर है एक आम नागरिक टी. वी. चैनल्स की ऐसी गैर जिम्मेदारियों तथा अहम् मुद्दों के भटकाव में खुद को ठगा हुआ महसूस करता है. उसे लगता है कि मीडिया टीआरपी बढाने का चक्कर में प्रायोजित न्यूज और समस्याओं की रंगारंग नौटंकी प्रस्तुत कर वास्तविक समस्याओं की अनदेखी कर रही है. शक होता है कि कहीं मीडिया का एजेंडा भी सरकारों द्वारा तो तय नहीं किया जा रहा, कहीं मीडिया सत्ता अथवा धनशक्ति के हाथों गिरवी तो नहीं हो रही. आखिर क्या वजह है कि भारतीय मीडिया का एक वर्ग किसान, मजदूर, शिक्षा, बेरोजगारी, कानून व्यवस्था तथा युवा वर्ग नैरास्य जैसी समस्याओं से लगभग विमुख हो रही दिखाती है. क्या वजह है कि मीडिया की दिलचस्पी स्टूडियों में निर्मित सेट, सेलेब्रेटीज तथा रंगारंग स्टेज आदि में ज्यादा है-ज्वलंत समस्याओं के चयन और उनके प्रस्तुतीकरण में भटकाव क्यों!

स्पष्ट है भारतीय मीडिया को अपनी भूमिका के प्रति पूरी प्रतिबद्धता के साथ आत्मंथान करना होगा. उसने अपने लिए कुछ मूल्य सुनिश्चित करने होगें.

**'असतो मा सद्गमय,**
**तमसो मा ज्योतिर्गमय'**

**-शुचिता पाण्डेय**

छात्रा-बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
भवन्स मेहता महाविद्यालय, भरवारी,
कौशाम्बी, उ.प्र.

इस कालम के अंतर्गत प्रत्येक माह एक ज्वलंत मुद्दा देते हैं. दिए गये मुद्दे पर आपको अपने विचार 150–200 शब्दों में टाईप कर या लिखकर उसकी फोटो अगले माह की 30 तारिख तक ई-मेल आईडी vsnehsamaj@rediffmail.com या ह्वाट्सएप नंबर 9335155949 पर भेज सकते हैं. साथ में अपनी फोटो, नाम एवं पता भेजना न भूलें. सर्वोत्तम तीन विचारों को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा. विषय में आज का मुद्दा अवश्य लिखे. लगातार तीन मुद्दो में चयनित होने पर सम्मान पत्र भी दिया जाएगा. इसमें कोई उम्र का बंधन नहीं है.

## इस माह का मुद्दा

## टूटते परिवार, विखरता बचपन....

# गंभीर अभिनेता "इरफान खान" याद आयेंगे

–ब्रजभूषण चतुर्वेदी–बीबीसी

सिनेमा संसार व फिल्म संसार में कलाकारों का अभिनय एक कला के रूप में ही लिया जाता है. लेकिन जब कलाकार के जीवन कला की सर्वोत्तम बात दिखाई दे तो वह कलाकार अमर हो जाता है. दर्शकों के दिल पर राज करने वाला टोंक का जन्मा ...व बम्बई में अभिनय का डंका बजाने वाला गंभीर स्वभाव का अभिनेता इरफान खान 28 अप्रैल को संसार से विदा हो गया व अपनी अभिनय की छाप छोड़ गया. 7 जनवरी 1967 में जन्मा इरफान खान मुझे जिंदगी में दो बार मिला था. एक बार नई दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में फिल्म "मकबूल" के प्रदर्शन पर पत्रकार वार्ता में जब उनके साथ कलाकार पंकज कपूर, ओमपुरी, नसीरूद्दीन शाह थे व फिल्म के निर्देशक निवास भारद्वाज थे. मैं फिल्म मकबूल देखकर बहुत प्रभावित हुआ था. दूसरी बार भी उनसे मेरी मुलाकात गोवा के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में हुई थी. मैंने कहा था क्या हाल है टोंक के शानदार कलाकार इरफान वे मुस्कुरा दिये थे. पानसिंग तोमर, पीकू व नई हिन्दी व अंग्रेजी फिल्मों में अपने अभिनय की छाप छोड़ने वाला यह महान कलाकार कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों की यादें छोड़ गया. स्वर्गवास के 4 दिन पहले मां को गंवाने वाला व 16 वर्ष की 85 में पिता को गंवाने वाला यह महान कलाकार सिर्फ 53 वर्ष की आयु में ही यादें छोड़कर संसार से विदा हो गया. यहां एक बात में कहना चाहता हूं कि जब भी मेरी बात इरफान से होती थी वे देशभक्त हिन्दूवादी एवं ईमानदारी की बात करने वाले व सबकी सहायता करने वाले इंसान थे.

प्रख्यात अभिनेता इरफान खान उन लोगों में से हैं जो अपनी जिद से उस मुकाम को पाते हैं जिसके लिए वह बने हैं. लिहाजा, इरफान खान को अभिनेता इरफान खान बनने में काफी समय लगा, लेकिन उन्होंने अपने लक्ष्य को आईने की तरह साफ रखा. एनएसडी, दिल्ली से अभिनय के गुर सीखने वाले इरफान देश में ही नहीं विदेशों में भी कई फिल्मों के जरिये अपनी अदाकारी साबित कर चुके हैं. जानते हैं कैसी है इरफान खान की दुनिया. जयपुर के एक नवाब परिवार में जन्में इरफान खान बचपन से ही स्कूली पढ़ाई को अपना दुश्मन समझते थे. वह कुछ नया करना चाहते थे. जब वह अपना ग्रेज्युएशन कर रहे थे तब उन्हें मिली एनएसडी में पढ़ने के लिए स्कॉलरशिप. फिर क्या था, मानों एनएसडी में उन्हें अपनी दुनिया मिल गई हो. यहां से अभिनय का पाठ पढ़कर उन्होंने मुम्बई का रूख किया. चन्द्रकांता, चाणक्य, और बनेगी अपनी बात, जैसे धारावाहिको में अपने मौलिक अभिनय की छाप छोड़ने वाले इरफान को बड़े परदे पर पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा. एक डॉक्टर की मौत, मकबूल, हासिल, जैसी फिल्मों ने उनके लिए आगे के रास्ते खोल दिए. चाहे वह सहायक अभिनेता की भूमिका हो या फिर खलनायक की सभी तरह की भूमिकाओं में उन्होनें अपने किरदार के साथ पूरा न्याय किया. लाइफ इन ए मेट्रो और स्लमडॉग मिलेनियर जैसी फिल्मों में उन्हें पहली श्रेणी के अभिनेताओं में शामिल करा दिया. फिल्मों का साथ देते-देते आज वह द वेरियर जैसी फिल्मों के जरिये अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भी खुद के

अभिनय का लोहा मनवा चुके हैं. एक कलाकार होने की स्थितियों के साथ सामन्जस्य बनाने की कला वह सीख गए है. चेहरा हासिल और द नेमसेक जैसी फिल्में इसका सटीक उदाहरण है. इसकी एक अहम वजह यह है कि वह आम अभिनेता बनना चाहते थे न कि कोई स्टारडम कलाकार. उनकी इसी ईमानदारी ने उन्हें खास बना दिया.

इरफान अभी भी एक जिद के साथ जिये हैं. उनकी मां भी यही चाहती थी कि इरफान घर लौट आये और लेक्चरर बन जाये. लेकिन खान अभिनय को अपना जज्बा मानते थे. वह कहते हैं कि मैं तब तक आराम नहीं कर सकता जब तक मैं अपनी पहुंच का पूरी तरह से विस्तार न कर लूं. इरफान भले ही अपनी भूमिका में शख्त दिखते थे लेकिन वह निजी जीवन में बेहद मौजी स्वाभाव के थे ओर मिलनसार भी. इरफान को उनका प्यार भी एनएसडी में ही मिला है. उन्होंने स्क्रीन राईटर सुतापा सिक्दर से शादी की है. सुतापा ने खामोशी और शब्द जैसी फिल्मों के संवाद लिखे हैं. बताना होगा कि इरफान एक अच्छे क्रिकेटर भी थे. उनका चयन सीके नायडू चैम्पियनशिप के लिए हो गया था लेकिन उनके पिताजी का कहना था कि क्रिकेट से ज्यादा पैसा नहीं कमाया जा सकता. तब उन्होंने अपने पिता जी को साफ साफ कह दिया कि वह कोई काम सिर्फ पैसा कमाने के लिए नहीं करना चाहते. इन्हीं बुलंद हौंसलों का नतीजा है कि आज इरफान खान एक सशक्त अभिनेता के रूप में पहचाने जाते हैं।.

जाते जाते -

✍ऑस्कर के लिए नामांकित फिल्म सलाम बाम्बे मे इरफान खान की भूमिका इसलिए काट दी गई थी कि वह बाकी बच्चों से अधिक बड़े दिख रहे थे.

✍एनएसडी में प्रवेश के लिए लगभग दस नाटकों मे अभिनय जरूरी है लेकिन इरफान ने तीन चार में ही अभिनय किया था. अंततः उनकी योग्यता को परखते हुए, उन्हें प्रवेश दे दिया गया.

अभिनेता इरफान खान की कुछ यादगार फिल्में-वादे इरादे, कसूर, गुनाह, प्रथा, हासिल, सुपारी, फुटपाथ, मकबूल, चरस, रोग, चेहरा, साढ़े सात पूरे, चाकलेट, अक्सर, यूं होता तो कया होता, द फायर डेडलाईन, नेमसेक, पीकू, पानसिंग तोमर व एक दर्जन और फिल्में।

(वरिष्ठ पत्रकार फिल्म लेखन, समीक्षक, फिल्मइतिहासकार)

**शेष पृष्ठ 11 का.....**

## आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन की समस्या

**चारण कालः** जार्ज ग्रियर्सन ने इसे चारण काल कहा था क्योंकि साहित्यकारों ने आश्रयदाता राजा के शौर्य, पराक्रम को दर्शाता हुआ यशोगान बहुतायत में लिखा था. भूषण, चन्दबरदाई जैसे इसके अनेक उदाहरण हैं.

**सिद्ध सामंत कालः** यह नाम राहुल सांकृत्यायन द्वारा दिया गया क्योंकि उनके अनुसार उस समय दो जीवन धाराएँ-सिद्ध संतों तथा सामंतों की, प्रवाहमान थीं.

**वीर कालः** विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी के अनुसार यह नाम उचित है.

**बीजवपन कालः** महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य के बीजारोपण का काल मानते हुए आदिकाल का यह नाम दिया.

इसी प्रकार अन्य भाषा-विज्ञानियों ने अपने-अपने विश्लेषण के अनुसार तरह-तरह के नाम दिये परन्तु अंत में सर्वस्वीकार्य नाम आदिकाल ही हुआ.

**साहित्य का प्रामाणिक न होनाः** आदिकाल का वह साहित्य जो कथित रूप से उस समय प्रकाशित होने से रह गया था तथा बाद में प्रकाशित कराया गया, उसके सर्जन-काल के संबंध में दावे के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता. आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने जिन पुस्तकों के आधार पर इस काल को वीरगाथा काल का नाम दिया था उनमें से अनेक पुस्तकें परवर्तीकाल में रचित पायी गयीं. इस संबंध में कुछ अन्य उदाहरण भी हैं जैसे वर्ष 1945 में राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी काव्य धारा का प्रकाशन कराया, वर्ष 1877 में पिशेल ने हेमचन्द्राचार्य के प्राकृत व्याकरण का सुसंपादित संस्करण प्रकाशित कराया. ऐसी अस्पष्ट स्थितियाँ सुव्यस्थित अध्ययन की सुगमता को कुप्रभावित करती हैं.

**पूर्व के कालखण्ड को सम्मिलित करने की दुविधाः** अपभ्रंश और पूर्व के काल खण्ड को आदि काल में सम्मिलित करने अथवा न करने पर विद्वानों में मतभेद भी आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन मे बाधा उत्पन्न करता है. उपरोक्त समस्याओं, दुविधाओं तथा काल-परिसीमा आदि की अस्पष्टता, अनिश्चितताओं के चलते ही आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे अंतर्विरोधों का काल कहा है.

धारावाहिक उपन्यास

# "मुगल-ए-आजम की विरासत"

**डॉ० अरुण कुमार आनन्द,**
चन्दौसी, संभल उ०प्र०

भाग-4

वाजिदखां-"वह एक इंसान है जहांपनाह, इंसान से इंसान की मोहब्बत तौहिन कहां और कैसी? क्या आपका मजहब यह सिखाता है हूजूर इसां से इसान नफरत करे?"

औरंगजेब- "लेकिन एक कनीज दुख्तर कों मुगल सल्तनत कीं मलिका-ए-बेगम बनने का हक, इस्लाम तर्जवत नही देता."

वाजिदखाँ- "यह सिर्फ कौम का फरमान है, अल्हा ताला का फरमान नही हैं जहा पंनाह जिन्दगी और मौत इंसान के हाथ में नही है, अल्लाह के हाथ में है मुगल-ए-आदिल."

औरंगजेब-"इसकी नुमाईस अभी हो जायगी वाजिद, (भारी क्रोध में कांपते हुए) तुम क्या चाहती हों हुस्न-ए-शबाब? (मीना की तरफ मुखतीब होकर जाल बहूत खूबसूरत फेंका है तुमने मलिक-ए-मुगल सल्तनत बनने का, तुम्हारा यह ख्वाब पूरा नही होगा. वाहिद तुम्हें मरने नही देगा. और हम तुमहे जीने नही देगें कनीज शहरावत?"

"यह ताकत भी आपके पास अब नही है बादशाह सलामत-मुगल-ए-आलम. जनाब औरंगजेब।" (वाजिद गुर्राया) थ्सपाहियों गिरफतार कर लों इन शाहंशाह-ए-मुगल कों."

मीना शहरावत कादीयों में जकड़ी अभी भी सिर झुकाये दरबारे आम में खड़ी है. मुगल दरबार में अब कोई भी बादशाह औरंगजेब के हूकूम का पाबन्द नही है. क्योंकि सल्तन की पूरी बाग़डोर अब वाजिद खां के पास है. बादशाह सलामत के पास अब कुछ भी हुकूमत की ताकत नही है. वाजिद खांन-उन्हें तख्त-ए-ताऊश से बेदखल नही करना चाहता था. उनके कई एहशान उस पर थें. मगर माहौल ही कुछ ऐसा बन रहा था कि उनकी मोहब्बत मौत की शूली पर लटकती नजर आने लगी थी तो वाजिद का सल्तनत से बगावत वाजिब ही था-वह हर कीमत पर बादशाह के गुस्से से बचाना चाहता था.

"हूकूम की तामीर किया जाए" (वाजिद फिर गरजा)

**वाजिदखाँ-"यह सिर्फ कौम का फरमान है, अल्हा ताला का फरमान नही हैं जहा पंनाह जिन्दगी और मौत इंसान के हाथ में नही है, अल्लाह के हाथ में है मुगल-ए-आदिल." औरंगजेब-"इसकी नुमाईस अभी हो जायगी वाजिद, (भारी क्रोध में कांपते हुए) तुम क्या चाहती हों हुस्न-ए-शबाब?**

"ठहरो, वजीर-ए-आजम मुगल सल्तनत, वाजिद खान."

दिवाने आम के दाखिल दरवाजे से मर्द की भारी आवाज गूंजी, सदर ईमाम सल्तनत-"अभी तुम्हारे पास इतनी हूकूमत-ए-कूबत नही है, कि तुम कुछ भी कर सको. अभी सल्तनत में मुगल ईमाम-सदर जिंदा है, यह तुम क्या करने जा रहे हो? तुम्हें मुगल सल्तनत के ऐन-कानून का इल्म नही है क्या? बेजार कनीज लौंडी की मोहब्बत में मुगल मजहब की तौहीन करने जा रहे हो. तवारिख-ए-ईस्लाम इसकी इजाजत नही देता वाजिद खाँ."

वाजिदखाँ- "इसके अलावा और कोई वाजिब जरिया भी तो नही है इस हालातों का सल्तनत-ए-इमाम साहब! टब आप ही संभालिए इस मामले को?"

मुगल सल्तनत में शाही इमाम बदरूददीन काजी साहब की बहुत बड़ी इज्जत होती है, इनका शाही रूतबा बदशाह सलामत मुगल सलतनत से बहुत ही ऊंचा- हूकूमत-ए-हाकीम का शाही दर्जा भी बादशाह सलामत से ऊंचा होता है. बादशाह सलामत कों इनके आदर में अपना सिंहासन इनके लिए खाली करना पड़ता है. ऐसा मुगल सल्तनत के हूकम-ए-शरियत में है. बनिस्पत औरंगजेब ने सदर इमाम साहब के लिए अपनी गद्दी खाली कर दी थी. हूकूम उसी का तामीर होता है, जो सल्तनत की गददी पर बैठा होता है. उन्होंने गद्दी पर बैठते ही इंसानियत-ओं इंसाफ का फरमान जारी कर दिया- "सिपाहियों यह समला मुगल सल्तनत कें तख्त-ए-ताऊश की इज्जत-सलामती और इंसानी इमान-शरियत का है. इससे इस्लाम मजहब भी जुड़ा हुआ है. सल्तनत के बादशाह और वजीरे आला को कोई ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे मुगल शरियत और मुल्क बदनाम हों मीना शहरावत कों कादीयों से आजाद कर दिया जाए. और बाइज्जत मेहमान खास (अतिथि

कक्ष) में ठहरने का बन्दोबस्त किया जाए. बाकी कार्यवाही अगले दरबार में होगी.''

मौलवी सदर इमाम साहब नें दरबार दिवाने आम मुअतल्ल कर दिया. इससे पहले कि दरबार खरिज हों मीना हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई और फरियाद करने लगी-

''जनाबे आली, फरियाद करना चाहती हूँ?''

कहो मोहसीना, क्या कहना चाहती हो?''

मीना-''यह माना कि हुजूर मुहब्बत गुनाह है, इसका ताल्लुक इंनसानियत से नही कुदरत की देन है, फिर क्यूं इंसान मुहब्बत के खिलाफ इतना जालिम व जल्लाद होता है? इस नाचीज को किसी शोहरत और तख्ते ताउस की तमान्ना नही है, हम बेगर्द कनीज हैं, हमें दरबार कें वसूलों और शानों-शौकत-मेहमान नवाजी की कतई जरूरत नही है, हम अपनी झोपड़ी में ही खुश है, हमें अपने घर जाने दिया जाए? मेहमान नवाजी के लिए शुक्रिया आला हजरत.''

**''पाठकों के लिए सार्वजनिक सूचना''**

ऐतिहासिक शिसिलेवार दास्तान, ''मुगल-ए-आजम की विरासत'' इस उपन्यास, के पात्र,-स्थान, घटनाक्रम- द्रष्य-शब्द एवं वाक्य संवाद की भाषा शैली से यदि किसी व्यक्ति या उसका धर्म-मजहब रस्मों-रिवाज तथा सामाजिक परंपराओं का अपमान होता है या उसके कारण आहत पहूंचता है, तो वह केवल एक संयोग ही है, उनके पात्र स्थान घटनाक्रम-सवांद दृष्य पृष्ठ भूति तथा शब्द-वाक्य आदि वास्तविकता को प्रमाणित नही करता. महज एक काल्पिनिक संबध ही माना जायगा. इससे मुद्रक प्रकाशक सम्पादक एवं लेखक का सहमत होना आवश्यक नही है। इस संदर्भ में विवाद का न्यायक्षेत्र चन्दौसी एवं जनपद संभल ही मान्य होगा. संतुष्ठी के लिए पाठक गण लेखक से पत्राचार द्वारा संपर्क कर सकते है.

**क्रमशः....**

सोसल मीडिया से

# परिवर्तन

(18 मुहावरों वाली लघु कहानी)

राजीव अपनी माता-पिता के अंधेरे 'घर का उजाला' तथा उनकी 'आंखों का तारा' था. उसके मम्मी-पापा इतना प्यार करते थे कि वह पढ़ाई से 'जी चुराने लगा' तथा 'अपने पांव कुल्हाड़ी मारने लगा'. वह बहुत जिद्दी हो गया था जैसे कि उसके 'अक्ल पर पत्थर पड़ गया' हो कि कोई फरमाईश पूरी न होने पर 'आसमान सिर पर उठा लेता था.' वह 'अपनी खाल में मस्त रहता' था तथा उसके माता-पिता का प्रयास 'अंधे के आगे रोने' जैसा होता था.

बड़ों की बात नहीं मानता था उसके 'आंखों का पानी ढल चुका' था. सबके सामने राजीव को बताया गया कि वह अनुत्तीर्ण है तो वह 'शर्म से पानी-पानी हो गया' तथा उसके मम्मी पापा 'अपना सा मुंह लेकर रह गए' तथा सबके सामने अपने बेटे को 'आंख तरेर भी नहीं सके.' जब दोस्तों को पता चला तो दोस्तों ने भी उसे 'आड़े हाथों लिया.' इस घटना से उसके अंदर अचानक इतना परिवर्तन आया कि अगले साल वह पढ़ाई के लिए 'दिन-रात एक करके' अच्छे मार्क्स से पास हुआ तो उसके माता-पिता भी 'फूले न समाए.' वही राजीव जो अपने पिता की 'इज्जत उतारने' में कोई कमी नहीं करता था वह अब अपने पिता के लिए 'आंखें बिछाने लगा' तथा फिर से अपने माता-पिता के 'आंखों में घर कर गया.'

-मिथिलेश कुमार श्रीवास्तव 'शिखर', वाराणसी


## क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

**विशेष आकर्षण**

**1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर**

**2. बिक्री की व्यवस्था**

**3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था**

**4.विमोचन की व्यवस्था**

**5. ऑन लाईन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन**

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

**प्रसार सचिव,** विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई-मेल: sahityaseva@rediffmail.com

## चिन्तन मनन

अन्तर्मुख करके अपना मन।
करना नित सहज विकार समन।
जब पावन भाव विचार बनें,
तब आत्म तोष चहुँ ओर अमन।
आत्म शोध जब करें सघन।
होगा शुचि सुन्दर निर्मल मन।
यह सहज सुखद आभास मिले,
समाया एक वही है जन-जन।
उसी तत्त्व का करना चिंतन।
सुमन सदृश्य प्रफुल्लित हो मन।
सद्भाव साधना संयम से,
होगा सुखमय प्रतिदिन जीवन।
जब द्वेष रहित हो जाता मन।
तब सुखद शांति आनंद भवन।
हो सबके प्रति सद्भाव सदा,
सहज सरल विमल है जीवन।
है आत्म तत्त्वमय धरा गगनं।
पशु-पक्षी पावक नीर पवन।
अति सूक्ष्म विशद है आत्म तत्त्व,
नित करें सदा हम यही मनन।

-कैलाश त्रिपाठी
अजीतमल, औरैया, उ.प्र.

## दोराहा

दौराहे पर खड़ी जिन्दगी,
लिए कई सवाल,
कई बवाल
चहुँ ओर घोर अन्धकार,
टिमटिमाता सा इक तारा,
ममता का सहारा,
क्यूँ बार-बार मेरा हाथ
पकड़, मुझे घसीट लाता
ये उस दौराहे पर
जहाँ से आगे जाना
कठिन,
पीछे आना असंभव,
खींचता तुम्हारी ओर
सिर्फ एक ही जवाब,
कि जिन्दगी के बचे पल
तुम्हारे नाम हो जाएँ
लगे मुझे कि किसी काम
आए मेरे ये निष्छल पल
बूढ़ी जिन्दगी।

-शबनम शर्मा
सिरमौर, हि.प्र.

## अब मै जिंदा हूं।

सारी रात नहीं सोई हूं
चीख चीख कर मैं रोई हूं।
चली गई हूं, छली गई हूं,
फिर आऊंगी जली हुई हूं
कटी जीभ से भी बोलूंगी
राज तुम्हारे मैं खोलूंगी।
जाते वक्त गिना था मैंने,
हंसी घिनौनी सुना था मैंने।
आग जलाई है अब तुमने
एक एक का हवन करूंगी।
भीख नहीं मांगूंगी अब मै
प्राण तुम्हारे मैं हर लूंगी।
मुझे नोचकर तुमने अपना
जीवन भी छलनी कर डाला।
वर्दी पर भी दाग लगा है,
हाय! भयंकर पाप लगा है।
कष्ट सहोगे अब तो तुम भी
जिंदा ही मर जाने वाला।
जाते वक्त गिना था हमने
एक एक का चयन करूंगी।
आग जलाई है अब तुमने
एक एक का हवन करूंगी।
बेटी जब जिंदा मरती है,
पिता भी जीकर ही मर जाता।
मां के आंचल से भी उठती
रहती है विध्वंसक ज्वाला।
बच पाओ तो बचते जाना,
गरल सी पी ली तुमने हाला।
तुमने समझा हमें सुला कर,
चौन की नींदें सो पाओगे।
और प्रमाणों को हथियाकर
पाप घिनौने धो पाओगे।
मरी मगर मैं अब जीवित हूं,
एक पल अब न शयन करूंगी।
आग जलाई है अब तुमने,
एक एक का हवन करूंगी।

-श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली',
रायबरेली, उ.प्र.

## संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

ईमेल :
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

## मंगलमय नव वर्ष

नये वर्ष में नव विहान हो, नया गान हो,
हर जीवन में नये सूर्य की शुभ लाली हो।
कोरोना से मुक्ति मिले, जीवन में पुष्प खिलें,
आपकी झोली कभी भी, खुशियों से न खाली हो।
रोग, दुःख होवे दूर, अहंकार चूर-चूर,
आपके घर पर भाग्य की स्वर्णिम थाली हो।
'अखिल' ईश की कृपा सदा रहे, आप पर,
परिवार की बगिया में नित हरियाली हो।

## सन्देश

समय बली होता है सदा, रखिए यह नित ध्यान।
घर, पद, धन या ज्ञान का, मत करिए अभिमान।।
दीपक बनकर तुम जलो, मत हो यों बेहाल।
ज्योति छूएगी व्योम को, बनकर एक मशाल।।
दो गज दूरी नित रखें, पहने मास्क जरूर।
सेनेटाइज हम करें, कोविड होगा दूर।।
आलस जीवन को सदा, करता है गतिहीन।
लक्ष्य प्राप्ति की शक्ति को, लेता है वह छीन।।
जीवन में संकल्प लें, नशे को देंगे त्याग।
नया सूर्य होगा उदित, जाग मनुज अब जाग।।
वर्तमान में तुम जियो, बॉटो सबमें प्यार।
सुख-दुख दोनों है क्षणिक, यह जीवन का सार।।

-अखिलेश निगम 'अखिल' आई.पी.एस.
पुलिस अधीक्षक (सहकारिता),
अपराध अनुसंधान विकास विभाग, उ.प्र.

## कविता

मन पर बौझ बहुत भारी है घर की भी है जिम्मेदारी।
काम काज के लिए निकलना घर से बाहर है लाचारी।
कैसे जान जहान बचाऐं इसी सोच में समय कट गया-
सक्रिय से निष्क्रिय हो जाना सच पूछो तो है दुश्बारी।
जिस जिस ने भी साथ दिया है उन सबका आभार बहुत है।
लॉकडाउन की इस अवधि में मैंने पाया प्यार बहुत है।
खतरा नहीं टला है लेकिन धैर्य साथ अब छोड़ रहा है-
संकट की इस कठिन घड़ी में विश्व हुआ लाचार बहुत है।
जहाँ जहाँ भी सिद्धान्तों से समझोता होता है यानि।
और कर्म कर्तव्य सभी के अर्थ जहाँ होते बेमानी।
वहाँ वहाँ पर ईश्वर अपनी कृपा कोर कम कर देता है-
सुख की छाया हट जाती है पीड़ा करती है मनमानी।
कैसे अपनी कलम रोक दूँ कैसे बन्द करूँ मैं लिखना।
जब तक शून्य नहीं होता है कोरोना का संकट दिखना।
पीड़ित की पीड़ा से मेरे मन में एक हूक उठती है-
मेरा मन भी रो पड़ता है दीन दुखी का देख बिलखना।
जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक मेरी कलम नहीं रूकने की।
किसी दर्द से किसी दर्प से मेरी कलम नहीं झुकने की।
सच का साथ दिया है मैंने जब से अपना होश सम्भाला-
किसी लोभ से भय से मेरी लेखनि झूठ नही लिखने की।

## अम्फन

अम्फन तुफान भयानक था कुछ उजड़ गये कुछ बिखर गये।
अंधियाँ चली तुफान उठा तन मन जन जीवन सिहर गये।
टावर उखड़े मोबाईल के ले गई हवा छत टीन कई।
कुछ बच्चे हुए अनाथ और बुझ गये घरो के दीप कई।
वह तान्डव मचा प्रलयंकारी रह गये सभी स्तब्ध खड़े।
इससे पहले कुछ कर पाते गिर गये वृक्ष भी बड़े बड़े।
बिजली पानी सब बन्द हुआ सम्पर्क सूत्र बेकार हुऐ।
सत्ता के महारथी सारे अम्फन आगे लाचार हुऐ।
कुछ मांगों के सिन्दूर धुले पॉवों के बिछुवे उतर गये।
लापता हुऐ कुछ जीवन तो कुछ पता नहीं है किधर गये।
उड़ गया हवा में काफी कुछ बह गया बहुत कुछ पानी में।
कुछ भी तो थाम नहीं पाये सामान धान तूफानी में।
खण्डहर हो गये घरोंदें सब सामान घरों का नष्ट हुआ।
बंगाल उड़िसा में लेकिन सबसे ज्यादा यह कष्ट हुआ।
रह गये कई सोते सोते जो बचे खड़े रोते रोते।
वह बीज ना जाने किधर गया जिसको वह खेतों में बोते।
कुछ माँऐं ढूंढ रही बच्चे कुछ बच्चे ढूंढ रहे माँऐं।
स्तब्ध खड़े घर के मुखिया मन का दुख किसको बतलाऐं।
दरवाजे टूट गये सारे उड़ गई हवाओं में खिड़की।
महिलाऐं कुछ बेहोश हुई छत पर जब जब बिजली कड़की।
प्राकृति क्यों क्रुद्ध हुई इतनी कुछ समझ नहीं पाया कोई।
हो गई फसल वह नष्ट सभी जो जीवन यापन को बोई।
बच्चों की पुस्तक भीग गई फट गये पहनने के कपड़े।
वट वृक्ष गिरा दब गयी भैस रो रहा चमन माथा पकड़े।
कोरोना हमला जारी था ऊपर से अम्फन ने मारा।
क्यों ग्रहण लगा है किस्मत को क्यों डूबा किस्मत का तारा।
कैसे पटरी पर लौटेगा जीवन है सोच यही भारी।
अब पुनः त्रास्दी कभी न हो यह कृपा करें अब गिरधारी।

**-हितेष कुमार शर्मा,** बिजनौर, उ.प्र.

# हिंदी रीति काव्य-नए सन्दर्भ में

**रीति काल में रचित काव्य यद्यपि पर्याप्त आलोचना का काल रहा परन्तु इस काल को उत्कृष्ट बताने वालों की भी कमी नहीं रही. इन आलोचकों में सर्वप्रथम मिश्र बंधुओं की बात की जाए तो हम पाते हैं कि मिश्र बंधुओं की आलोचना दृष्टि का आधार छंद, अलंकार, रस, नायक-नायिका भेद आदि था.**

-डा. सीमा वर्मा,
लखनऊ, उ.प्र.

'रीति काल' अर्थात काव्य में विशिष्ट रीति का काल, जिसमें काव्य की कलागत विशेषताओं को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से श्रृंगाररस की प्रधानता रही.

रीतिकाल को नए सन्दर्भ से जोड़ने अथवा तुलनात्मक समीक्षा करने के लिए आवश्यक है कि पहले रीति काल को उस काल के काव्य की विशेषताओं के आधार पर और परोक्ष में तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर समझा जाए. रीति काल का समय 1643 ई. से 1843 ई. तक समझा जाता है और इस काल का नामकरण जार्जग्रियर्सन द्वारा रीति काल के रूप में किया गया था और आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डा. नगेन्द्र तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी यही माना और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे श्रृंगार काल, मिश्रबन्धु ने अलंकृत काल, त्रिलोचन ने अन्धकार काल, रमाशंकर शुक्ल (रसाल) ने कला काल का नाम दिया. रीति का शाब्दिक अर्थ यहाँ पर काव्य के विभिन्न अंगों अर्थात रस, छंद, अलंकार, गुण दोष, नायिका भेद, लक्षण आदि की बंधी हुई परिपाटी या परंपरा का अनुसरण करने से है. मोटे तौर पर रीति काल को रीति बद्ध एवं रीति मुक्त दो भागों में विभाजित किया गया है. रीति को परिभाषित करते हुए आचार्य वामन ने कहा- 'विशिष्टा पद रचना रीतिः' और 'विशेषो गुण आत्मः' अर्थात विशिष्ट पद रचना ही रीति है. विश्वनाथ प्रसाद ने कहा 'रीतिकाल का साहित्य विशुद्ध साहित्य सर्जना का काल है.' यद्यपि काव्य रचना की दृष्टि से इस युग को महत्वपूर्ण काल कहा जाता है, परन्तु किसी सीमा तक इसे उपेक्षनीय भी कहा गया है, जैसा कि निम्न पंक्ति से स्पष्ट है-

लोगनकवित्तकीबो खेल करि जानो हैं।
एति झूठी जुगतिबनावे और कहावे कवि।।

अर्थात बनावटी और जुगत लगा कर कविता बनाने से कवि कहाने लगे हैं. यह युग मध्यकाल का युग था तथा इस युग में मुगल सत्ता और सामंत राज्य प्रबल थे, युद्ध की स्थिति नहीं थी और राजा संप्रभु नहीं थे जबकि आदिकाल में राजा संप्रभु थे और युद्ध करने का निर्णय लेने की स्वतंत्रता थी इस कारण से आदिकाल में वीर रस की प्रधानता रही और रीति काल में दरबार का प्रभाव होने के कारण काव्य में विलास एवं श्रृंगाररस का अधिक प्रभाव दिखाई देने लगा. इस काल में कवियों की काव्यगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए कवियों को तीन विभिन्न भागों में विभाजित किया गया- रीति बद्ध कवि, रीति सिद्ध कवि तथा रीतिमुक्त कवि. यद्यपि रीति काल के प्रथम कवि या प्रवर्तक के रूप में डा. नगेन्द्र केशवदास को, तो रामचंद्र शुक्ल चिंतामणि त्रिपाठी को मानते हैं और रीतिकाल के अंतिम कवि के रूप में ग्वाल कवि को तथा अंतिम प्रसिद्ध कवि पद्माकर को माना जाता रहा है. रीतिबद्ध काव्य के विषय में आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी का कथन है कि "रीतिबद्ध काव्य हिन्दी को श्रृंगार की उक्तियों का जैसा भारी भंडार सौंप गया है उसमें कूड़ा- करकट या केवल अशिष्ट या अश्लील वर्णन ही नहीं हैं उसमें श्रृंगार की प्रभूत परिमाण में इतनी अच्छी-अच्छी उक्तियां भी संचित हैं जितनी संस्कृत क्या किसी भी साहित्य में उपलब्ध नहीं हो सकती. इसे इसकी कड़ी से कड़ी आलोचना करने वाले महानुभावों ने भी स्वीकार किया है." रीति सिद्ध कवियों को कवि तथा आचार्य दोनों समझा गया और इनके द्वारा कलापक्ष और भाव पक्ष दोनों पर बल

दिया गया तथा स्वानुभूति के आधार पर मौलिकता की सृष्टि भी दिखाई देती है सौन्दर्य के शारीरिक पक्ष तथा संयोग श्रृंगार पर इन कवियों द्वारा भी बल दिया गया. बिहारी को रीति सिद्ध कवि कहा जाता है क्योंकि रीति ग्रन्थ की रचना न करने के बावजूद भी उन्होंने अपनी एकमात्र रचना 'सतसई' में रीति की जानकारी का पूरा प्रयोग किया है, यही कारण है कि जब तक किसी को काव्यांगों की तथा नायिका भेद की जानकारी नहीं होगी, तब तक वह बिहारी सतसई के दोहों का अर्थ नहीं जान पायेगा.

रीति काल में रचित काव्य यद्यपि पर्याप्त आलोचना का काल रहा परन्तु इस काल को उत्कृष्ट बताने वालों की भी कमी नहीं रही. इन आलोचकों में सर्वप्रथम मिश्र बंधुओं की बात की जाए तो हम पाते हैं कि मिश्र बंधुओं की आलोचना दृष्टि का आधार छंद, अलंकार, रस, नायक-नायिका भेद आदि था. मिश्र बंधुओं ने रीतिकाल को 'अलंकृत' काल कहा. अलंकृत काल के भी वे दो भाग करते हैं-पूर्वालंकृत काल तथा उत्तरलंकृत काल. उनका मानना है कि 'जिस प्रकार सूरदास और तुलसीदास के समय में कृष्ण और राम-भक्ति की धारा उमड़ी, उसी प्रकार भूषण और देव के काल में उत्साह और वीरता की धारा उभर कर आई. मिश्र-बंधु पूर्वालंकृत काल के कवियों को भाषा-साहित्य के आचार्य कहते हैं इनमें देव, भूषण, मतिराम, चिंतामणि, श्रीपति, कवीन्द्र, जसवंत सिंह, सूरति मिश्र, रसलीन, कुलपति और सुखदेव मिश्र के नाम आते हैं. इस काल के कवि भाषा को अलंकृत करने में सिद्धहस्त थे. उनका मानना है कि इस काल में भाषा अलंकृत हुई, वीर एवं श्रृंगार की वृद्धि रही, आचार्यत्व में परिपक्वता आई, भक्ति एवं कथा-प्रसंग शिथिल पड़े और काव्योत्कर्श की संतोशदायक उन्नति हुई. यह समय हिन्दी के लिए बड़े गौरव का काल हुआ. मिश्रबंधुओं ने भिखारीदास, सोमनाथ, रघुनाथ, सेवक, ठाकुर, बोधा देवकीनंदन, ग्वाल, तोश तथा पजनेस आदि को श्रृंगारी कवि माना है. उनका मानना है कि उत्तरलंकृत काल में काव्य रचना करने वालों में कुछ को छोड़कर उत्तमता नहीं है. मिश्रबंधु विनोद में वे लिखते हैं कि "उत्तरलंकृत काल में भाषा भूषणों से लद गयी, श्रृंगार-कविता खूब बनी, आचार्यता बढ़ी, कथा-प्रासंगिक प्रथा ने धर्म से संबंध करके बल पाया, साधारण कथा-प्रासंगिक ग्रंथ भी रचे गए और खड़ी बोली ने गद्य में भी जड़ पकड़ी. परमोत्कृष्ट कवियों का इस समय अभाव सा रहा, परंतु उत्कृष्ट कवियों की मात्रा अन्य सभी समयों से विशेष रही, भाषा-माधुर्य के सम्मुख भाव-संकुचन हुआ एवं महाराजाओं में काव्य-प्रेम स्थिर रहा.'

राम चन्द्र शुक्ल जी रीतिकालीन साहित्य में जीवन के विभिन्न पहलुओं का अभाव पाते हैं तथा कहते हैं कि 'इस परंपरा द्वारा साहित्य के विस्तृत विकास में कुछ बाधा पड़ी. कवियों की दृष्टि एक प्रकार से बंधी और सीमित हो गई. क्षेत्र संकुचित हो गया. कवियों की व्यक्तिगत विशेषताओं की अभिव्यक्ति का अवसर बहुत ही कम रह गया.' आगे वे रीतिकाल के कवियों पर लिखते हुए उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा तथा उनके कवि कर्म के अनेक आयामों की सराहना करते हैं. वे लिखते हैं कि- 'इन रीतिग्रंथों के कर्ता भावुक, सहृदय और निपुण कवि थे. उनका उद्देश्य कविता करना था न कि काव्यांगों का शास्त्रीय पद्धति पर निरुपण करना. अतः उनके द्वारा बड़ा भारी कार्य यह हुआ कि रसों, विशेषकर श्रृंगाररस और अलंकारों के बड़े ही सरस और हृदयग्राही उदाहरण अत्यंत प्रचुर परिमाण में प्रस्तुत हुए.' इस प्रकार देखा जाये तो शुक्ल जी रीतिग्रंथकारों की कवि-प्रतिभा और देन को स्वीकार करते हैं.

रीतिकाल के साहित्य को लेकर अन्य साहित्यकारों के द्वारा मिली जुली प्रतिक्रिया दी गयी परन्तु प्रधान रूप से श्रृंगाररस तथा शारीरिक सौन्दर्य को अपने काव्य में स्थान देने के कारण रीति काल आलोचना का विषय बन कर रह गया तथा काव्यगत अन्य विशेषताएं उपेक्षित रह गयीं. आलोचकों द्वारा यहाँ तक भी कहा गया कि संकुचित जीवन दृष्टि होने के कारण इस काल के कवियों ने संयोग श्रृंगार की कवितायें लिख कर आश्रय दाता राजाओं का मनोरंजन ही किया. डा. भागीरथ मिश्र लिखते हैं, 'ऐसा लगता है कि रीति कविता के रचयिता यौवन और वसंत के कवि हैं. उसने जीवन का एक ही स्वरुप लिया, एक ही पक्ष लिया, यह इस धारा के कवि की संकीर्णता है, दुर्बलता है और एकांगिता है.' जहाँ एक ओर भक्ति कालीन साहित्य एक सन्देश के साथ साहित्य जगत में अवतरित होता है, वही दूसरी ओर रीति काल के साहित्य में कोई भी सन्देश नहीं मिलता. गंभीर चिंतन, जीवन की अनेकरूपता तथा जीवन दर्शन इस काल के साहित्य में लुप्त प्राय ही है.

रीति काल में प्रबंध काव्य का अभाव रहा क्योंकि एक दोहे या मुक्तक के माध्यम से कवि राजा महाराजा को प्रसन्न करने में सफल हो जाते थे और कवि

दंगल में प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति प्रबंध की रचना करने में आड़े आती थी. बिहारी को इसी कारण से गागर में सागर भरने वाला कवि कहा गया क्योंकि दोहे या छंद के माध्यम से उन्होंने गहन बात कह दी थी और उनके रचे दोहों के लिए यह भी कहा गया, 'देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर.'

रीतिकाल के कवियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली ब्रज भाषा को साहित्य में परिमार्जित रूप प्राप्त हो चुका था और काव्य हेतु उपयुक्त रूप ले चुकी थी परन्तु रीति काल के कवियों द्वारा बृज भाषा के रूप में भी अपने हिसाब से तोड़ मरोड़ की गयी, जिसके लिए रामचंद्र शुक्ल जी कहते है, 'रीतिकाल में एक बड़े अभाव की पूर्ति हो जानी चाहिए थी, पर वह नही हुई. भाषा जिस समय सैकड़ों कवियों द्वारा परिमार्जित होकर प्रौढ़ता को पहुंची उसी समय व्याकरण द्वारा उसकी व्यवस्था होनी चाहिए थी. यदि शब्दों के रूप स्थिर हो जाते और शुद्ध रूपों के प्रयोग पर जोर दिया जाता, तो शब्दों को तोड़ मरोड़ कर विकृत करने का साहस कवियों को न होता, पर इस प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं हुई, जिससे भाषा में बहुत कुछ गड़बड़ी बनी रही.'

रीतिकालीन कवियों की भाषा में दूसरी ओर लाक्षणिकता, व्यंजना का अद्भुत प्रयोग घनानद के काव्य में देखा जा सकता है और काव्य सौष्ठव, भाषा सामर्थ्य एवं आलंकारिकता के कारण बिहारी सतसई को रीतिकाल की सर्वश्रेष्ठ कृति माना जा सकता है. रीतिकाव्य की इस प्रकार की उपर्युक्त आलोचना अथवा मूल्यांकन विभिन्न प्रकार से विभिन्न लेखकों/आलोचकों द्वारा की गयी और देखा जाए तो तत्कालीन लेखकों की आलोचना के मापदंड उनके समय की उत्कृष्ट शैली, भाषा के स्वरुप, काव्यगत सौन्दर्य तथा परिस्थितियों को आधार बनाते हुए की गयी.

आधुनिक सन्दर्भ में रीति काव्य को देखा जाए तो उस समय में रीति काव्य की प्रमुख आलोचना का विषय स्त्री सौन्दर्य का दैहिक चित्रण है, जिसमें स्त्री के मनोभावों को भी केवल नायक में कामोद्दीपन हेतु ही दर्शित किया गया है, इसी प्रकार का चित्रण आधुनिक युग में स्त्री की उन्मुक्तता तथा देह यष्टि का प्रदर्शन इस प्रकार से करना कि उपभोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाना, हिन्दी रीति काव्य परंपरा से कुछ पृथक तो नहीं है.

रीति काव्य को लेकर उपर्युक्त विशेषताओं को यदि आज के काव्य गत साहित्य के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो उस समय का काव्य उत्कृष्ट स्वीकार करने में दो राय नहीं हो सकती. कारण यह है कि रीतिकाल के साहित्य में काव्य सौष्ठव, बृज भाषा का माधुर्य, काव्य शास्त्र के नियमों का पालन, भाषा में आनुप्रासिकता एवं आलंकारिकता आदि विशेषताएं नए सन्दर्भ में भी रीति साहित्य को श्रेष्ठ बनाती हैं. रीति काल से पूर्व लिखा गया साहित्य यद्यपि तुलनात्मक दृष्टि से कहीं अधिक समृद्ध था और यदि उस युग के साहित्य को परमोत्कृष्ट कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी. भक्ति काल का परमोत्कृष्ट भक्ति साहित्य, जिसमें प्रबंध काव्य रचना हुई, जिसमें भाषा सौष्ठव, आत्मगत सौंदर्य, आध्यात्मिकता, भावनाओं की पवित्रता जैसे विशिष्ट गुण विद्यमान रहे और उत्कृष्ट रचनाओं के कारण ही साहित्य के स्वर्ण युग को भक्ति काल ने स्वर्ण युग की उपाधि अपने नाम कर ली, तो उसके पश्चात रीतिकाल की रीति बद्ध रचनाओं में अथवा रीति मुक्त काव्य की आलोचना होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि इस काल में न तो कोई प्रबंध काव्य रचा गया और लक्षणा, व्यंजना और आनुप्रासिकता एवं आलान्कारिकता का गुण विद्यमान होते हुए भी भक्ति काल में पूर्णतया उत्कृष्ट रूप को प्राप्त बृज भाषा को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया और आध्यात्मिक पक्ष के स्थान पर दैहिक पक्ष को महत्त्व देना सर्वाधिक आलोचना का विषय बना.

आधुनिक परिवेश में, जबकि साहित्य का स्वरुप, काव्य का स्वरुप पूर्णतया परिवर्तित हो चुका है, ऐसे में परिपाटी युक्त रीति काल का काव्य, जिसमें आचार्यत्व एवं काव्य गत सौन्दर्य दोनों विद्यमान थे, उत्कृष्ट ही प्रतीत होता है. रीति काव्य का एक अत्यधिक आलोचनात्मक पहलू स्त्री का कामोत्तेजक रूप कविता के माध्यम से चित्रित करना था, जो तत्कालीन कवियों की विलासी मानसिकता को प्रदर्शित करता है. रीति काव्य में स्त्री के रूप में परिवर्तित होने वाली युवती या युवती के रूप में विकसित होने वाली बालिका के शारीरिक सौष्ठव को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया मानो स्त्री की फेमिनिटी ही उसका एकमात्र आभूषण है और उसकी अपनी संवेदना, भावना, प्रेम, आत्मानुभूति और उनके व्यक्तित्व का एकमात्र केंद्र उसके शारीरिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति तथा नायक का कामोद्दीपन ही है. नीलिमा चौहान अपने ब्लाग 'आँख की किरकिरी' में लिखती हैं, हिंदी साहित्य के रीतिकाल में आधुनिक विमर्शों के इतिहास की कल्पना के लिए पर्याप्त व विस्तृत अध्ययन सामग्री उपलब्ध है. अपनी श्रृंगारिकता, स्थूलता, दैहिकता और सौंदर्य-केन्द्रीयता

के कारण रीतिकाल की आक्षेपग्रस्त कविता अपने समय का पहला यौनिकता का प्रगल्भ इतिहास सामने रखती है. फूको ने हिस्ट्री आफ सेक्सुएलिटी की पृष्ठभूमि में जिस महानतापूर्ण, दंभपूर्ण, प्रपंचकारी सामाजिक परिवेश की बात की है वही परिवेश रीतिकाल की कविता की पृष्ठभूमि का भी रहा. शाही दंभ की प्रतिच्छाया में पनपी कविता में शौर्य व श्रृंगारिकता कविता के प्रधानतम उत्प्रेरक तत्व दिखाई देते हैं. प्रेम पर रसिकता का, संवेदना पर प्रयोजनवादिता का, आत्मानुभूति पर कल्पना का प्राध ाान्य ही दिखाई देता है. इस पूरे परिवेश में स्त्री की देह ही है और वह भी विशुद्ध आब्जेक्टिफाइड अंदाज में. स्त्री का अस्तित्व व उसकी संवेदना-पक्ष ही नहीं उसका सामाजिक कर्म भी दर्ज नहीं है. इस कविता का परिवेश व उसकी रचना प्रक्रिया में ही नहीं उसकी आस्वाद्यता में भी स्त्री की उपस्थिति का नकार है.

यदि आज की स्थिति में तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो आधुनिक साहित्य में रीति काव्य में मिलने वाला काव्य सौष्ठव तो विलुप्त प्राय है और स्त्री का कामोत्तेजक रूप उसके अल्पायु से ही विभिन्न तकनीकी साधनों में उसकी अपनी इच्छा शक्ति एवं धन लोलुपता के कारण दिखाई देने लगता है. यह भी विडम्बना ही है कि रीति काल के काव्य में आश्रय दाता राजाओं को प्रसन्न करने हेतु और संभवतः इनाम पाने के लोभ में उनकी रूचि की श्रृंगारपरक रचनाएं लिखी जाती रहीं होंगी, रीतिकाल के कवि भक्त नहीं थे और दरबारी कवि होने के कारण शोहरत के साथ साथ धन भी मिल जाया करता था और आजीविका का साधन ना होने के कारण इस प्रकार की श्रृंगारपरक कवितायें लिखी जाती रही होंगी. जैसा कि डा. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र लिखते हैं कि, 'जनता में जो रचनाएं होती थीं, उनमें श्रृंगार का अतिरेक तो है, पर प्रक्रिया प्रेम का अतिरेक नहीं. प्रकिया की चेष्टाओं, विदग्धता आदि का आधिक्य फारसी -साहित्य के संपर्क के कारण हुआ है. (हिन्दी साहित्य का अतीत, आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ ५७) हैं.

रीति काल में स्त्री को इतना अधिक वस्तु के रूप में प्रस्तुत कर दिया गया कि उसका सामाजिक रूप कहीं तिरोहित ही हो गया. पत्नी, उप पत्नी, भाभी, प्रेयसी के रूप में मूल्यों का जो पतन रीतिकाल की कुछ कविताओं में दिखा, उसकी परछाईं आधुनिक समाज में भी देखने को मिल रही है. रीतिकाल के काव्य में नायिका की देहयष्टि को प्रमुख मानते हुए जो अभिव्यक्ति की गयी, उसमें स्त्री का अपना अस्तित्व कहीं भी नहीं परिलक्षित नहीं होता है, केवल आलम्बन स्वरूप कोई नायिका चाहिए, चाहे वह कोई भी हो, जैसी भावना को प्रकट करते हुए देव ने निस्संकोच रूप से स्वीकृत किया है.

काम अंधकारी जगत, लखै न रूप कुरूप।

हाथ लिए डोलतफिरै, कामिनिछरी अनूप।।

तातैंकामिनि एक ही, कहनसुनन को भेद।

राचैंपागै प्रेम रस, मेटै मन के खेद।

यदि तटस्थ रूप से आधुनिक सन्दर्भ में रीति कालीन काव्य की चर्चा की जाए तो कुछ ऐसे घटक सामने आते हैं, जो परोक्ष रूप से तत्कालीन काव्य की रचना में मुख्य भूमिका निर्वाह करते दिखाई देते हैं. रीति काव्य को मात्र इसलिए तिरस्कृत करना कि उसमें श्रृंगारिकता को अधिक महत्त्व दिया गया है, किसी भी आलोचना का आध ाार नहीं हो सकता. डा. नगेन्द्र का कहना है कि रीतिकाल का उचित मूल्यांकन 'वाक्यम्रसात्मकम्काव्यम्' और 'काव्य ही जीवन की समीक्षा है' के भेद को समझते हुए ही किया जा सकता है। यदि 'वाक्यम्रसात्मकम्काव्यम्' तथा 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दःकाव्यम्' की कसौटी पर रीतिकाव्य को परखा जाये तो यह काव्य उपेक्षा या तिरस्कार का काव्य नहीं लगेगा. समस्त रीतिकाव्य को नैतिक मूल्य की कसौटी पर कसना वे उचित नहीं मानते लेकिन वे इतना मानते हैं कि अपने युग की आत्मघाती निराशा को प्रकट करने के लिए इस युग के कवियों ने प्रशंसनीय कार्य किया. डा. नगेन्द्र के शब्दों में, 'घोर पराभाव के उस युग में समाज के अभिशप्त जीवन में सरसता संचार कर इन कवियों ने अपने ढंग से समाज का उपकार किया था। इनमें संदेह नहीं कि इनके काव्य का विशय उदात्त नहीं था. उसमें जीवन के भव्य मूल्यों की प्रतिष्ठा नहीं थी, अतः उसके द्वारा प्राप्त आनंद भी उतना उदात्त नहीं था. काव्य-वस्तु के नैतिक मूल्य का काव्य-रस के नैतिक मूल्य पर प्रभाव निश्चय ही पड़ता है, और इस दृष्टि से रीतिकाव्य का नैतिक मूल्य निश्चय ही कम है, फिर भी अपने युग की आत्मघाती निराशा को उच्छिन्न करने में उसने स्तुत्य योगदान किया, इसमें संदेह नहीं इस सत्य को अस्वीकार करना कृतघ्नता होगी.

रीतिकाल के काव्य पर तत्कालीन सामंती राज्य व्यवस्था का प्रभाव होने के कारण और राजाओं के आश्रय में रहने के कारण कविताओं वैविध्य नहीं दिखाई देता परन्तु बहुत से रचनाकारों ने राज्य दरबार का चित्रण भी किया है. पद्माकर लिखते हैं-

गुलगुली गिल में गलीचा है, गुनिजन हैं,

चाँदनी है, चिक है चिरागन की माला है।
कहैंपद्‌माकरत्यौंगजकगिजा है सजी,
सेज हैं सुराही हैं सुरा हैं और प्याला हैं।
सिसिर के पाला को व्यापत न कसाला तिन्हें
जिनके अधीन ऐते उदित मसाला हैं।
तान तुक ताला है, विनोद के रसाला है,
सुबाला है, दुसाला हैं विसालाचित्रसाला है।

इस युग की कविता की एक विशेषता सभी के द्वारा स्वीकार की गयी कि श्रृंगारिकता का घोर प्रयोग होते हुए भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया गया.

चूंकि रीतिकाल एक परंपरागत आलोचना की कैद में रहा और कुछ एक आलोचकों द्वारा रीतिकाव्य में कुछ सकारात्मक बिंदु भी प्रस्तुत किये गए, इसी कड़ी में कोलंबिया यूनिवर्सिटी की प्रो० डा. एलिसनबुश ने अपनी पुस्तक 'पोएट्री ऑफ किंग्स' में आलोचना के शिकार रीति काव्य को श्रृंगार से आगे बढ़ कर तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के साथ जोड़ कर देखा और अपने प्रिय कवि केशव के सहारे वक प्रक्रिया खोज निकाली, जिससे ब्रज भाषा 'कास्मोपालिटनवर्नाकुलर में बदलकर उस दौर के श्रेष्ठ साहित्य का माध्यम बनी और इसका दायरा भी विस्तृत हुआ.

आज के सन्दर्भ में देखा जाए तो रीतिकाल के कवियों व उनके कृतित्व को पुनर्प्रतिष्ठित करने की जैसे होड़ लगी हुई है. कारण यह है कि 200 वर्ष के रीति काल में लिखी रचनाओं और कवियों को एक ही मापदंड में तोल कर विभिन्न आलोचकों ने पिछले डेढ़ सौ वर्ष में भरपूर आलोचना की, परन्तु जब इतनी आलोचनाओं के पश्चात् रीति काव्य के परोक्ष की परिस्थितियों का गहन अध्ययन किया गया तो रीतिकाल की विशेषताएं सामने लाने का कार्य भी कुछ लेखकों द्वारा किया गया. इनमें डा. एलीसनबुश और संध्या शर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है. लगभग 200 वर्ष तक रचे गए काव्य साहित्य को अत्यधिक आलोचना का शिकार होना पड़ा और बाद में रामचंद्र शुक्ल तथा विश्वनाथ मिश्र द्वारा कुछ इतर रूप में अपना दृष्टिकोण रखते हुए रीति काव्य की विशेषताओं को उजागर किया गया. सुधीश पचौरी अपनी पुस्तक के प्रारम्भ में लिखते हैं कि कितना भयानक है यह देखना कि पूरे दो सौ साल तक रीतिकाल की कविता 'अश्लील' कहे जाने का दंड भोगती रही, नकली होने, बनावटी होने, फरमाइशी होने, की सजा पाती रही और इसी के साथ वे तमाम हजारों नायिकाएँ निर्जीव कर दी गयीं जो कि किसी समय जीती-जागती रही होंगी. इतिहास निर्माण के सत्तामूलक विमर्श ने यही किया. इतिहास लेखन के इस नियंत्रणवादी विमर्श को खोला जाना जरूरी है ताकि ये नायिकाएँ मुक्त हो सकें. उनके कवि मुक्त हो सकें. इस तरह प्रारंभ में ही पचौरी जी पुस्तक के लक्ष्य को स्पष्ट कर देते हैं. इस पुस्तक में मूलतः यह स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है कि दीर्घ काल तक चलने वाली आलोचना और काव्य को लेकर की गयी व्याख्या पूर्वाग्रहों से ग्रसित थी. रीतिकाल के कवियों पर लगाए गए विभिन्न आरोप की पृष्ठभूमि में राजनैतिक और मर्दवादी नैतिकता काम कर रही थी.

सुधीश पचौरी अपनी पुस्तक में यह भी बताते हैं कि रीतिकाल में श्रृंगारपरक रचनाओं के साथ स्त्री देह यष्टि का वर्णन मात्र कवि की कल्पना नहीं थी, वरन वह तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब था, जो स्वच्छंद सेक्सुअलिटी और जेंडर समकक्षता पर आधारित थी. इस प्रकार के अनेक दावों के साथ सुधीश पचौरी ने अपनी पुस्तक में रीतिकाल की पुरानी परंपरागत आलोचनाओं को पाश्चात्य लेखकों द्वारा लिखी पुस्तकों का संदर्भ देते हुए नए मापदंड के साथ प्रस्तुत किया है.

रीति काल को न तो पूर्णरूप से सर्वोत्कृष्ट काल कहा जा सकता है और न ही पूर्ण रूप से उपेक्षित काल कहा जा सकता है. यद्यपि काव्य शास्त्र का ज्ञान इसी काल मे नियमों के साथ हुआ और काव्य गत विशेषताओं तथा भाषा सौष्ठव की दृष्टि से यह काल चरम उत्कर्ष का काल है, परन्तु सामाजिक रूप से अचेतन होने के कारण यह पक्ष उपेक्षित रह गया है. इसके अतिरिक्त आश्रयदाता राजाओं की रूचि की कवितायें लिखने वाले कवियों के पास दूसरा कोई साधन या उपाय भी नहीं था. यह भी सत्य है कि यदि आश्रयदाता राजाओं ने इन कवियों को आश्रय देकर प्रोत्साहन न किया होता, तो रीतिकाल का साहित्य तिरोहित हो चुका होता अतः कला, काव्य और कवियों को संरक्षण देने का कार्य आश्रयदाता राजाओं द्वारा ही किया गया. नए सन्दर्भ में भी यही बात सच है कि रीति काल का एक ही पक्ष न दिखा कर सकारात्मक पक्ष भी सामने लाया गया.

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1.हिन्दी साहित्य का अतीत-विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 2. हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास, हजारी प्रसाद द्विवेदी, 3.हिन्दी साहित्य की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी, 4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, (संपा.) डा. नगेन्द्र, 5. परंपरा का मूल्यांकन, रामविलास शर्मा, 6. डा. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, 7. डा. भगीरथ मिश्र, हिन्दी रीति साहित्य, 8. ब्लॉग द्वारा नीलिमा चौहान, 9. सेक्सुअलिटी का समारोहः लेखक सुधीश पचौरी, 10. हंस पत्रिका, 11. पोएट्री ऑफ किंग्स : लेखिका डा. एलीसनबुश

## हम गरीब हैं, पर बेईमान नहीं

बेटी की जिद से मैं एक गन्ने-रस की दूकान पर रुक गई और उसने हमें बैठने के लिए कुर्सी दी. मैंने उससे दो गिलास गन्ने-रस की मांग की. उसने हमें दो बड़े गिलास में गन्ने का रस भरकर दिया. उस कड़ीधूप में वह रस अमृत की तरह हमें राहत पहुँचा रहा था. गन्ना-रस पीने के बाद हममें नयी ऊर्जा भर गई थी. मैंने दुकानदार से दो गिलास का दाम पूछा. उसने 40 रुपये बताए.

'इतना ज्यादा, अभी एक जगह हमने पूछा था तो उस गन्ने रस वाले ने 30 रुपये बताया था.' मैंने झूठ कहा.

'दीदी, सब कुछ बहुत महँगा हो गया है. अब पहले जैसी बचत नहीं है. यह दो गिलास आप लोगों को पिलाकर मुझे 10 रुपये ही बचेंगे.'

'बस-बस ज्यादा झूठ मत बोलो. यह लो 30 रुपये और ज्यादा बात मत करो.'

'नहीं दीदी, विश्वास कीजिए. कुछ नहीं बचेगा.'

'यह लो और 5 रुपये और. तुम लोगों की किचकिच कभी नहीं जाएगी. बस बेईमानी करते रहो और लाभ कमाते रहो.'

यह कहकर मैं आगे बढ़ गई. कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद मुझे लगा पीछे से कोई आवाज दे रहा है. मैंने मुड़कर देखा कि वही गन्ने रस वाला भागता हुआ मेरे पास आ रहा है. मैं रुक गई. गन्ने रस वाले ने पास आकर मेरा मोबाइल मुझे दिया और कहा-

'दीदी, इसे आप मेरी बेंच पर भूल गई थी. यही आपको लौटने आया हूँ. हम गरीब हैं, पर बेईमान नहीं. जाता हूँ, दूकान पर ग्राहक हैं.'

**-डा. प्रकाश कुमार अग्रवाल**

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, खड़गपुर, प.बं.

## मिठाई का डिब्बा

दोपहर के बाद चार साढ़े चार बजे के लगभग जैसे ही दरवाज़े की घंटी बजी वर्माजी ने उठकर दरवाज़ा खोला. सामने वर्माजी के पड़ौसी असीम और उसकी अम्मी खड़े थे. असीम के हाथ में एक साफ-सुथरा पैक किया हुआ मिठाई का डिब्बा था. वर्माजी उन्हें आदर के साथ अंदर ले गए. सोफे पर बैठते हुए असीम ने डिब्बा वर्माजी को पकड़ाया तो उन्होंने उत्सुकता से पूछा, "ये किस ख़ुशी में?" जवाब असीम की अम्मी ने दिया, "भाई साहब बेटे असीम की शादी हुई है उसी ख़ुशी में." हाँ अभी तीन हफ़्ते पहले ही तो हुई थी असीम की शादी. "अरे ये तकलीफ़ क्यों की आपने?" वर्माजी ने औपचारिकता प्रकट करते हुए कहा. "तकलीफ़ कैसी भाई साहब! आपने भी तो अपने बेटे की शादी में भिजवाया था मिठाई का डिब्बा. जब आप नहीं भूले थे हमें तो अब हम कैसे भूल जाएँ आपको?" असीम की अम्मी ने फिर जवाब दिया.

थोड़ी देर गपशप करके और चाय पीकर असीम और उसकी अम्मी चले गए. शहर की सबसे बढ़िया और अपनी पसंदीदा मिठाई की दुकान की मिठाई का डिब्बा देखकर वर्माजी के मुँह में पानी आ रहा था लेकिन संकोचवश असीम और उसकी अम्मी के सामने डिब्बा खोलने से बचे रहे लेकिन उनके जाते ही उन्होंने रैपर फाड़ डाला। लेकिन ये क्या? मिठाइयाँ कुछ सूखी-सूखी सी लग रही थीं. डिब्बे को उलट-पलटकर देखा तो उसी दिन की तारीख़ की पैकिंग की स्टैम्प लगी हुई मिली. वर्माजी ने दो तीन टुकड़े तोड़कर मुँह में डाले पर मज़ा नहीं आया. मिठाइयाँ सूखकर खंगर बन चुकी थीं. स्वाद नदारद था. इतनी बड़ी दुकान और मिठाइयों का ये हाल?

वर्माजी मिठाइयों के बेहद शौकीन हैं लेकिन सिर्फ़ ताज़ा और उम्दा मिठाइयों के शौकीन. उन्होंने डिब्बा बंद करके मेज़ के दूसरे कोने की ओर सरका दिया. अचानक वर्माजी के दिमाग़ में सुबह का दृश्य कौंध गया. आज सुबह ही असीम के ससुराल के लोग उनसे मिलने आए थे. कुछ देर बाद ही असीम उनके लिए नाश्ता वग़ैरा लेकर आया था. उसके हाथ में ये वाला मिठाई का डिब्बा भी था. वर्माजी को माजरा समझते देर नहीं लगी क्योंकि वर्माजी असीम के परिवार की फ़ित्रत से पूरी तरह से वाक़िफ़ थे. नए रैपर में पुराना माल बख़ूबी पैक करने का करिश्मा वे पहले भी कई बार दिखला चुके थे. आज भी उन्होंने ऐसा ही किया था.

ताज़ा मिठाई के डिब्बे में से मिठाइयाँ निकालकर मेहमानों को खिला दीं और ख़ुद खा लीं. फिर उस डिब्बे में शादी की बची हुई तीन हफ़्ते पुरानी सूखकर खंगर हो चुकी मिठाइयाँ ख़ूबसूरती से पैक करके वर्माजी के परिवार को थमा गए. लेकिन असीम से एक ग़लती हो गई. मिठाइयाँ उसी दुकान की थीं पर दूसरे शहर की ब्रांच की थी.

मिठाइयों के नीचे लगी और सूखकर उनसे चिपकी हुई छोटी-छोटी काग़ज़ की प्लेटों पर बांग्ला भाषा में दुकान का नाम छपा हुआ था. असीम मिठाइयों के नीचे बांग्ला भाषा में छपी काग़ज़ की प्लेटों को हटाना और उनकी जगह हिन्दी भाषा में छपी काग़ज़ की प्लेटें लगाना भूल गया था.

**-सीताराम गुप्ता,** पीतमपुरा, दिल्ली

## पढ़ाई

आज दिव्या दोपहर में अपने कमरे में गई, लेकिन अभी शाम के 8 बजने को आये, बाहर नहीं निकली. ये बच्ची हमारे पड़ोस में ही रहती है. मैं अपना काम निबटाकर बाहर निकली, तो उसकी मम्मी से राम सलाम हुई. वो मुझे आज कुछ खिन्न सी नजर आई. मैंने कारण पूछा तो उसने बताया कि उसकी बेटी का रिजल्ट आया है, वो अपनी कक्षा में प्रथम आई है. उसने आगे पढ़ने की इच्छा प्रकट की है. लेकिन उनकी जाति में ज्यादा पढ़े-लिखे लड़के नहीं मिलते. वो मुझसे पूछने लगी, "बताओ, बहनजी, अब ऐसे हालात में अगर मैं उसे पढ़ा दूँ, तो ये सारी उमर इस घर पर ही बैठी रहेगी, आज दोपहर से कमरा बंद करके बैठी है, रोये जा रही है. न कुछ खाया, न नीचे आई है." उसकी बात सुनकर मुझे एक झटका लगा. मैं अपनी पड़ोसिन को अपने घर ले आई. वह बहुत दुविधा में थी. घर वालों का दबाव, बच्चे का प्यास, उसका भविष्य सब कुछ उनके चेहरे पर स्पष्ट झलक रहा था. मैंने कुछ देर इधर-उधर की बातचीत करके उन्हें सहज करने की कोशिश की, फिर कहा, "देखो दिव्या की मम्मी, हम और आप बरसों से अपनी गृहस्थी चला रहे हैं, कितने उतार-चढ़ाव इसमें देखने पड़ते हैं. आप मुझे बताओ कौन सा रिश्तेदार मदद करने या हमारी समस्या को सुलझाने आया? और हाँ, हम किसकी गृहस्थी में कुछ निपटाने गये? सबको अपनी-अपनी जिन्दगी खुद ही निपटानी होती है. दिव्या आपकी बेटी है और आजकल बेटा-बेटी में क्या फर्क? उसे पढ़ाओ और एक अच्छा अफसर बनाओ, बिन जाति-पाति देखे अनगिनत रिश्ते आएँगे. एक अच्छा लड़का देखकर शादी कर देना. अगर आपकी जाति में लड़के नहीं पढ़ते, तो इसमें दिव्या का क्या कसूर? वो लाखों में एक है. आगे आपकी मर्जी." वो एकटक मेरी ओर देखती रही और मेरा हाथ थामकर तेजी से अपने घर की ओर ले गई व भरी आँखों से दिव्या के कमरे तक. दरवाजा खटखटाया, दिव्या ने दरवाजा खोला. आँखें सूजी, चेहरा पीला हुआ पड़ा था. माँ ने उसे बाँहों में भरा और बोली, "बेटी, पोंछ दे अपने आँसू, मैं तुझे पढ़ाई कराऊँगी, भले ही लोग कुछ भी कहें. तेरी आंटी ने मेरी आँखें खोल दी." दिव्या खुशी से और भी जोर से रोने लगी और बोली, "सच माँ, थैंक यू आँटी, थैंक यू।"

**-शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि.प्र.


1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

**विश्व स्नेह समाज**

**हिन्दी मासिक**

एक प्रति–15 / रुपये, वार्षिक–150 / रुपये, पंचवर्षीय–750 / रुपये, आजीवन–1500 / रुपये, संरक्षकः 11000 / रुपये

खाता संख्या–66600200000154, आईएफएससी कोड–बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011, मो0ः 9335155949, ई–मेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

कहानी

# गुलदस्ता

मैने बाथरूम में अंदर जाकर स्नान की तैयारी में ऊपर की कमीज व बनियान उतारी ही थी कि अपने पाते सम्यक की जोर जोर से रोने चीखने की आवाज सुनाई पड़ी. मैं कुछ बोलता कि मेरी श्रीमती वर्तिका जी बोल पड़ीं- अरे क्या हो गया-क्यों रो रहा है सम्यक? सम्यक का रोना अभी बंद भी नहीं हुआ था कि एक और उसने रोने की चीख के साथ नेहा की भी आवाज सुनाई दी जो ठीक से समझ में नहीं आ रही थी. मुझे समझने में देर नहीं लगी कि सम्यक की आज जबरदस्त पिटाई हो रही है. नेहा को जब गुस्सा आता है तो फिर वह सम्यक की ऐसी ही बेरहमी से पिटाई करती है- और यह भी नहीं देखती कि उसके कहीं चोट लग जाएगी या पहले से ही कमजोर दुबले पतले बच्चे का रो-रो कर सिसकियॉ भर भर कर दम फूलने लगेगा और सॉस रूकने लगेगी. मुझसे यह सब सोच कर नहीं रहा गया और मैंने स्नान कार्यक्रम में फौरन 'रिवर्स गियर' लगाया, ऊपर की बनियान व कमीज वापस पहन कर बाहर आ गया. तेजी से डगमगाता हुआ मैं सम्यक के पास पहुँच गया. वहॉ पहुँच कर जो दृश्य मैंने देखा वह यह था. चार वर्ष का सम्यक जमीन पर लेटा हुआ था. नेहा उसका एक हाथ पकड़ कर उसे घसीट रही थी जैसे कोई बेजान वस्तु हों. सम्यक चीख खीख कर रो रहा था. नेहा बार-बार कह रही थी- इतना नालायक लड़का है कि कभी सीधे से समय से तैयार नहीं होता है स्कूल जाने के लिए. एकदम चलो बाथरूम में, नही ंतो बहुत मारूँगी. और सम्यक था कि रोए ही जा रहा था- नहीं जाऊँगा- मारा क्यों मुझको- नहीं जाऊँगा.

नहीं चलेगा तो मार-मार कर तेरा भुर्ता बना दूँगी आज. नेहा गुस्से में लाल होकर कहे जा रही थी. मुझसे नहीं रहा जा रहा था. मैं कुछ बोलने और सम्यक को पिटने से बचाने के लिए आतुर हो रहा था. मेरी गतिविधियाँ देख कर नेहा मुझसे बोल पड़ी- देखिए आप बीच में मत बोलिए. सम्यक का रोना सिसकना मुझसे नहीं सहन हो रहा था. मैं बोल पड़ा-क्या बात है, मत पीटो नेहा. बड़ी बेरूखी से नेहा ने मुझे तुंरत ही जवाब दिया- नहीं, कुछ नहीं. कहना नहीं मानेगा तो और पिटेगा. मैंने नेहा के इस बेरूखी भरे उत्तर को सहन करते हुए बड़े कोमल शब्दों में फिर कहा- बेटा नेहा, कुद बतलाओ भी तो क्या बात है? बेचारा सिसक सिसक कर रो रहा है. नेहा का फिर वही कठोर उत्तर था- कोई बेचारा वेचारा नहीं. रोने दीजिए. इतनी देर से बुला रही हूँ तैयार होने के लिए. बस निकल जाएगी तो दस किलोमीटर गाड़ी से छोड़ने जाना पड़ेगा स्कूल. जाने क्या कर रहा था अभी तक. टेप, कैंची, कागज, स्टैपलर से ही खिलवाड़ करता रहता है हर समय. और सम्यक था कि सिसकियाँ भर-भर कर रोए चला जा रहा था. मेरा सम्यक टूटने लगा. नेहा की पूरी नाराजगी का जोखिम उठाते हुए मैंने सम्यक को अपने पास ले कर प्यार करते हुए पूछा-क्या बात है बेटा? चुप हो जाओ. मम्मा के साथ जाकर तैयार हो जाओ.

नहीं जाऊँगा-मम्मा ने मारा क्यों? सम्यक ने सिसकियाँ भरते हुए ही टूटती टूटती आवाज में जवाब दिया.

मैंने समझाया-बेटा, स्कूल जाने को देर हो रही थी- तुम तैयार नहीं हो रहे थे। खैर, अब मम्मा कह रही है जाओ तैययार हो जाओ.

मम्मा सॉरी बोले, कुछ 'कॉम्प्रोसाइजिंग लहजे में सम्यक ने कहा.

सम्यक की ओर देख कर नेहा एकदम बोल उठी- मैंने कौन सी गलती की है जो मैं सॉरी कहूँ! गलती तुमने की है, तुम बोलो.

मैं माँ-बेटे को देख कर चुप था. इतने में मेरी निगाह सम्यक के एक गाल पर गई. खरोंच का बड़ा सा निशान था. खून झलक रहा था. स्पष्ट था कि नेहा की उँगलियों के नाखूनों से सम्यक का गाल बुरी तरह छिल गया था.

**चार वर्ष का सम्यक जमीन पर लेटा हुआ था. नेहा उसका एक हाथ पकड़ कर उसे घसीट रही थी जैसे कोई बेजान वस्तु हों. सम्यक चीख खीख कर रो रहा था. नेहा बार-बार कह रही थी- इतना नालायक लड़का है कि कभी सीधे से समय से तैयार नहीं होता है स्कूल जाने के लिए. एकदम चलो बाथरूम में, नही ंतो बहुत मारूँगी.**

मेरे मुख से निकल पड़ा- अरे इसके गाल में तो घाव हो गया. सैवलॉन और सोफ्रामाइसिन लाओ। नेहा चुप रही. वर्तिका सुन रही थी. वह तुरंत सैवलॉन, रूई और सोफ्रामाइसिन लेकर आ गई. मैंने और वर्तिका ने किसी प्रकार पुचकार कर सम्यक के गाल को पहले सैवलान से साफ किया, और उसके बाद सोफ्रामाइसिन लगा दी. फिर मैंने नेहा से कहा- बेटा, अब आज ऐसे ही स्कूल की ड्रेस पहना दो. मत नहलाओ आज और सम्यक को प्यार कर लो. जब तक तुम उसे प्यार नहीं करोगी वह रोना बंद नहीं करेगा. नेहा की कुछ समझ में आया. उसने हल्के से ही सही सम्यक को प्यार किया और जल्दी कपड़े बदले. सम्यक का और उसके छोटे तीन वर्ष के भाई शौर्य का टिफिन तैयार किया. बस्ता तैयार किया और नौकर को साथ लेकर बस पर छोड़ने चली गई।

सम्यक जाते समय भी रूऑसा था. मैंने दोनों से 'बाय' की तो उन्होंने भी हाथ हिला दिया. बोले कुछ नहीं.

नेहा दोनों बच्चों को बच में बिठाने के लिए गई हुई थी. बस चोराहे पर जो घर से लगभग दो सौ मीटर पर है, रूकती है. बेटा अक्षत दोरे पर गया हुआ था. शाम को पाँच बजे तक आ पाएगा. मैं सोच रहा था- आज क्या बात हुई सम्यक की देर होने की. फिर ध्यान आया कि सम्यक आज तो सुबह मेरे पास ही काफी देर तक बैठा था. मोटे वाले कागज, स्टैपलर, टेप, कैंची व रंगीन पेन मुझसे लेकर कुछ कुछ बनाने में व्यस्त था. फिर मुझसे बोला- बाबा, आप कागज से ऐसे गोल गोल बना दीजिए. फिर उसने 'कोन' की शक्ल के दो सम्यक और शौर्य अक्सर ऐसे ही मुझसे कागज, कैंची, स्टेपलर, टेप, पेन, आदि लेकर कभी लिफाफे, कभी पर्स या कभी कुछ और कभी कुछ बनवाते रहते हैं या कभी-कभी कोरे कागज पर तरह-तरह की गोदा-गादी या कोई भी आकृति बनाते रहते हैं, तो आज इस कारण भी सम्यक को स्कूल के लिए तैयार होने में देर हो गई थी. मुझे यह भी याद आया कि सम्यक ने सुबह ही मुझसे बोला था-बाबा, आप मेरे बगीचे से बड़े बड़े बहुत सारे अच्छे वाले फूल तोड़ कर रखिएगा-बड़ी डन्डियों के साथ। गुलाब के फूल भी. हम दोपहर में जब स्कूल से लौटकर आएँगे तो हमे दे दीजिएगा. और हाँ, जो हमने ये कागज के कोन बनाए हैं ये भी सँभाल कर रखिएगा. हम स्कूल से आकर आपसे ले लेंगे. सम्यक की हिदायतें मुझे विशेष रूप से याद रखनी पड़ती हैं अन्यथा मुझे उसकी नाराजगी की भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

**आज क्या बात हुई सम्यक की देर होने की. फिर ध्यान आया कि सम्यक आज तो सुबह मेरे पास ही काफी देर तक बैठा था. मोटे वाले कागज, स्टैपलर, टेप, कैंची व रंगीन पेन मुझसे लेकर कुछ कुछ बनाने में व्यस्त था. फिर मुझसे बोला- बाबा, आप कागज से ऐसे गोल गोल बना दीजिए.**

मैं वर्तिका के साथ अपने कमरे मैं बैठा था. वर्तिका भी कह रही थी-आज सम्यक बेचारा बहुत रोया. बहुत दुःखी हो रहा है मन. मुझे लगा कि अब तक तो नेहा बच्चों को छोड़ कर वापस आ गई होगी. सोचा चलो देखते हैं क्या कर रही है. यह भी जिज्ञासा थी जानने की कि सम्यक राजी खुशी बस में बैठ कर चला गया या नहीं. नेहा उस समय ड्रॉइंग रूम में सोफा पर एक कोने में बैठी थी. मैं चुपके से वहाँ पहुँच गया. देखा तो नेहा रो रही थी. दुःखिया कर. आँसू भर भर कर. मैं पहुँचा तो नेहा एकदम हड़बड़ा कर उठ बैठी. मेरे मुँह से निक गया- अरे यह क्या कर रही हो?

कुछ नहीं, और आँसू पोंछते हुए वह ड्रांइग रूम से अंदर आने लगी.

मैंने कहा, चलो जाओ, अब मन खराब मत करो. बच्चे तो शैतानी भी करते हैं और जिद भी. मैं सोच रहा था- माँ भी क्या होती है. अपने जिगर के टुकड़े को जितनी बेरहमी से पीटता है, उससे कहीं अधिक बेरहम चोट उसके सीने में उसे लगती है. जितना अधिक वह उसे रूलाती है, उससे कई गुना अधिक वह खुद रोती है. जितना दर्द उसके दिल के टुकड़े को होता है, उससे कहीं अधिक दर्द से वह खुद कराहती है. नेहा किचन में अपने काम पर लग गई. मैं भी अपने कमरे में आ गया.

दोपहर में दो बजे जब सम्यक और शौर्य स्कूल से वापस आए तो नेहा घर पर नही थी. क्लब की मीटिंग में गई हुई थी. नौकर बस से उतारकर दोनों बच्चों को घर ले आया था. उनके कपड़े बदल. जल्दी से खाना लाया. दादी वर्तिका ने तुंरत ही नेहा को फोन पर बतला दिया कि सम्यक और शौर्य आ गए हैं- तुम आ जाओ. वर्ना कोई क्लेश न शुरू हो जाए. जब नेहा घर पहुँची तो बच्चे अपना खाना खतम

करने की स्थिति में थे. नेहा ने हाथ मुँह धुलाया और पलंग पर ले गई. दोनों सम्यक व शौर्य नींद में झूमने लगे थे. माँ के साथ पलंग पर लेटते ही दोनों सो गए.

सम्यक चार बजे सो कर उठा तो सीधे मेरे पास पहुँचकर बोला- बाबा आपने फूल तोड़कर रखे है? हाँ बेटा मैंने खूब सारे अच्छे-अच्छे फूल तोड़कर रखे हैं तुम्हारे लिए. और इंडियों सहित तोड़े हुए सारे फूलों के गुच्छे जो मेरे कमारे में सामने ही रखी हुई रैक पर रखे हुए थे उठाकर सम्यक को दे दिए.

और मेरे कागज वाले काम? सम्यक ने पूछा. वे तो मैंने बहुत संभाल कर रखे हैं. मैंने अपनी अलमारी में उन्हें बड़ी हिफाजत से रख रखा था. मैं उन्हें अलमारी खोल कर निकाल लाया. अब इन्हें खूब अच्छी तरह से रख-रख कर अच्छे-अच्छे दो गुलदस्ते बना दो. फिर टेप से चिपका दो जिससे गिरें नहीं. सम्यक ने आदेशात्मक स्वर में मुझसे कहा.

**उसे समझते देर नहीं लगी कि आज उसकी बर्थ डे है. और उसने एकदम सम्यक को अपने पास खींच कर पूरी ताकत से अपने सीने से लिपटा लिया. मैं भी अवाक खड़ा था. जब सम्यक यह सब तैयारी मुझसे करवा रहा था तो मुझे अंदाज तो लग रहा था कि सम्यक का कुछ करने का इराद़ा है. मैंने उससे पूछा भी था पर उसने यही कहा था- बाबा, करो तो. बाबा बनाओ तो बस!**

हम दोनों ने मिलकर इंडियों सहित फूलों को सजाकर दो सुंदर से गुलदस्ते तैयार कर लिए. अब तक शौर्य भी जाग गया था. वह भी उठ कर हम लोगों के पास आ गया. एक गुलदस्ता शौर्य के हाथों में देता हुआ सम्यक बोला- चलो बाबा, चलो शौर्य, मम्मा के पास चलो. हम लोग सम्यक के साथ पीछे-पीछे चल दिए.

नेहा अपने कमरे में जागती हुई पलंग पर लेटी हुई थी. हम लोगों को देखा तो उठ कर बैठ गई. सम्यक आगे बढ़ा और नेहा के हाथों में फूलों का गुलदस्ता देते हुए व हँसते हुए करारी आवाज में बोला, हैपी बर्थ डे, मम्मा. वेरी हैपी बर्थ डे.

नेहा एक क्षण को स्तब्ध रह गई- देखती ही रह गई सम्यक की ओर. उसके मुख से निकल पड़ा-अरे यह क्या.

उसे समझते देर नहीं लगी कि आज उसकी बर्थ डे है. और उसने एकदम सम्यक को अपने पास खींच कर पूरी ताकत से अपने सीने से लिपटा लिया. मैं भी अवाक खड़ा था. जब सम्यक यह सब तैयारी मुझसे करवा रहा था तो मुझे अंदाज तो लग रहा था कि सम्यक का कुछ करने का इराद़ा है. मैंने उससे पूछा भी था पर उसने यही कहा था- बाबा, करो तो. बाबा बनाओ तो बस!

शौर्य ने भी नेहा को गुलदस्ता देते हुए 'हैपी बर्थ डे' बोला. नेहा ने उसे भी 'थैंक यू' बोलते हुए गले से लगा लिया. मैंने कहना शुरू किया, नेहा, सुबह जो कुछ भी अप्रिय हुआ उसके पीछे सम्यक का तुम्हारे लिए प्यार और तुम्हारी बर्थ डे के लिए उसका अति उत्साह ही था. सुबह वह मेरे पास बैठकर और बाद में भी वह तुम्हें बर्थ डे का उपहार देने की तैयारी में व्यस्त था जिसके कारण स्कूल जाने की तैयारी में देर हुई और तुम्हारी मार खानी पड़ी. बच्चे बहुत भोले होते हैं. उनका मन स्वच्छ जल की तरह बिल्कुल साफ और कोमल होता है. नेहा एकदम फूट पड़ी और आँसुओ से भरकर पुनः सम्यक को सीने से चिपका लिया और उसके गालों तथा माथे पर चुम्बनों की झड़ी लगा दी. वह फफक-फफक कर रो रही थी और उसकी आँखों से आँसुओं की बरसात रूक ही नहीं रही थी. एक अद्भुत करूणामय दृश्य था वह. बलात् मेरी आँखे भी भीग गई.

कुछ देर बाद जब सम्यक माँ के सीने से अलग हुआ तो बोला, मम्मा, पॉच बजे तक पापा भी आ जाऐगे. हम अभी बाबा के साथ जाकर केक ले आते हैं। कैंडिल भी ले आएँगे. फिर पापा के आने के बाद आपकी हैपी बर्थ डे बहुत अच्छे से मनाएँगे.

ठीक है ले आओ. चले जाओ बाबा के साथ. नेहा ने प्यार से कहा. सम्यक ने फिर बड़े भोलेपन से पूछा, मम्मा, कैंडिल कितनी लानीं है?

बेटा, बस एक कैंडिल लाना.

क्यों मम्मा, मेरी हैपी बर्थ डे में तो चार कैंडिल लगाई थीं. आप तो हमसे बहुत बड़ी हैं. फिर एक क्यों.

बेटा, बड़े लोगों की बर्थ डे में एक ही कैंडिल लगाते है. बहुत सारी लगाने में तो सारी केक ही भर जाएगी. केक खराब हो जाएगी.

अच्छा।, कहकर सम्यक मेरे पास आ गया- चलिए बाबा, जल्दी चलिए, नही तो पापा पहले ही आ जाएंगे.

अपने कमरे में कील पर टंगी हुई कार की चाभी मैंने अपने हाथ में ले ली. उध ार पूजा के लिए सूजी का हलवा तैयार करने को नेहा किचेन में पहुँच गई.

# देवनागरी लिपि की वर्णमाला सर्वश्रेष्ठ है : डा० शेख

विश्व की अन्य लिपियों की तुलना में देवनागरी की वर्ण माला परिष्कृत, विकसित व सरल है, इस आशय का प्रतिपादन नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली के कार्याध्यक्ष प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ने किया. तपस्वी पब्लिक चौरिटेबल, येवती संचालित तथा डा. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद से सम्बद्ध उस्मानाबाद के स्थानीय व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय नागरी लिपि संगोष्ठी में उद्‌घाटक के रूप में बोल रहे थे. डा. शेख ने आगे कहा कि देवनागरी लिपि में पर्याप्त वर्ण संख्या उपलब्ध है. उसकी कुल तिरपन वर्ण संख्या ग्यारह स्वरों व बयालीस व्यंजनों में विभाजित है.

तपस्वी पब्लिक चौरिटेबल ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष श्री शेषाद्रि अण्णा डांगे जी ने अपने आशीर्वचन में नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषओं की महत्ता प्रतिपादित करते हए लिपि की अनिवार्यता को स्पष्ट किया. प्रा. नीलू गुप्ता, केलिफोर्निया ने अमेरिका में देवनागरी के अध्ययन अध्यापन की प्रक्रिया को सप्रमाण समझाया. डा. पी. आर. वासुदेवन शेष, चेन्नई ने कहा कि देवनागरी अत्यंत प्राचीन लिपि है. श्री सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक, ओस्लो, नार्वे ने व्यक्त किया कि नागरी लिपि राष्ट्रीय ही नही बल्कि अंतरराष्ट्रीय एकता की प्रतीक बन सकती है.

डा. राजलक्ष्मी कृष्णन, राज्य प्रभारी, तमिलनाडु ने कहा कि देवनागरी समस्त भाषाओं को जोड़ने वाली लिपि है. अलिखित बोलियों के लिए देवनागरी लिपि वरदान साबित हो सकती है. समापन सत्र में मुख्य अतिथि-डा.

हरिसिंह पाल, महामंत्री-नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली ने कहा कि राष्ट्रीय एकता को बलवती बनाने में नागरी लिपि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.लिपि के अभाव में अनेक भाषाएं संकटग्रस्त है. पूर्वोत्तर राज्यों की भाषाएं देवनागरी लिपि में सुरक्षित की का रही है. समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए तपस्वी पब्लिक चौरिटेबल ट्रस्ट के सचिव श्री मिलिंद पाटिल जी ने नागरी लिपि परिषद के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की गोष्ठियां भारतीय स्थापित भाषाओं में निकटता स्थापित करने में सफल सिद्ध हो सकती है.

महाविद्यालय के प्राचार्य डा. प्रशांत चौधरी ने राष्ट्रीय स्तर के निबंध प्रतियोगिता के परिणामों कि घोषणा की. महाविद्यालय के अंतर्गत गुणता आश्वासन प्रकोष्ठ की समन्वयक डा. अर्चना बनाले ने गोष्ठी की सफलता में अहम भूमिका निभाई. गोष्ठी के संयोजक डा. विनोद कुमार वायचाल ने गोष्ठी का सफल संचालन किया तथा सह संयोजक डा. संजय जोशी ने धन्यवाद ज्ञापन किया. इस गोष्ठी में राष्ट्रीय तथा अंतर राष्ट्रीय स्तर के लगभग तीन सौ प्रतिभागियों ने अपना सक्रिय सहभाग दर्शाया.

## सोशल मीडिया से

एक गदहे ने हाथी से पूछा कि आसमान का रंग कैसा है?
हाथी ने कहा नीला गदहे ने कहा सुर्ख.
इस बात पर दोनों ने बहस शुरू किया.
काफी बहस के बाद यह फैसला हुआ के जंगल के बादशाह के पास जाते हैं यानी...'शेर' के पास.....
शेर के पास गए तो हाथी ने कहा जनाब मैं कहता हूं आसमान का रंग नीला है और यह गदहा कहता है कि सुर्ख है.....तो आप हमारा फैसला करें... शेर ने कहा हाथी को दस कोड़े मारे जाएं.... तो हाथी ने कहा जनाब मैं तो हक पर हूँ मुझे कोड़े क्यों मारे जाएं...? तो शेर ने कहा तुम्हें पता है के यह 'गदहा' है तो तुमने बहस क्यों की?

## भक्तिकालीन संतकाव्य की प्रासंगिकता

# संत साहित्य में सिद्ध और नाथों ने भी भूमिका निभाई है : डॉ० चन्द्रशेखर

30 जनवरी, लखनऊ, उ.प्र. 'भक्ति कालीन संत काव्य परंपरा बड़ी पुरातन है पर आज भी उनकी प्रासंगिकता है. इसकी वजह है-भक्ति काल में उच्च कोटि की रचनाओं का संपादित होना! मानवीय संवेदनाओं को गढ़ना! संत साहित्य में सिद्ध और नाथों ने भी भूमिका निभाई परन्तु कविवर कबीर जी का नाम संत साहित्य में अग्रिम पंक्ति में लिया जाता है. इसके साथ ही दादू दयाल, सुंदरदास, नामदेव, ज्ञानेश्वर, मीराबाई, संत रज्जब, तुलसीदास, रहीम, रसखान कुछ महत्वपूर्ण नाम है जिन्होंने संत साहित्य को, संत काव्य को जीवंत और जीवन के लिए मायनेपूर्ण बना दिया. इस काल में संतों ने धर्म, दर्शन, जीव, जगत, ब्रह्म आदि संबंधी जो विचार रखे, बेबाक रखे और जिंदगी को गढ़ने के लिए रखे. संत काव्य की धूरी महात्मा कबीर मानवता के प्रतिनिधि स्वर थे.' उक्त विचार मुख्य अतिथि, प्रो. चंद्रशेखर सिंह, विभागाध्यक्ष हिन्दी, डॉ. जे.पी. मिश्र शासकीय स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय, मुंगेली, छ.ग. ने अपने उदबोधन में व्यक्त किए.

डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी

डॉ० सीमा वर्मा
स्वागताध्यक्ष

डॉ वन्दना श्रीवास्तव
'वान्या' हिन्दी

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज की लखनऊ ईकाई द्वारा प्रत्येक माह की 30 तारिख को सायं 7 बजे आयोजित होने वाले हिन्दी साहित्य के इतिहास के क्रम में आज चौथी गोष्ठी 'भक्तिकालीन संतकाव्य की प्रासंगिकता' विषय पर एक आनलाइन विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मेघालय, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के वक्ताओं ने अपने विचार रखें. गोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने की.

मुख्य वक्ता के रूप में शिलांग, मेघालय वरिष्ठ शोधकर्ता, आई.सी.एस.एस.आर -दिल्ली डॉ० अनीता पंडा, ने कहा 'हिंदी के भक्त कवियों का योगदान जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में रहा है. भक्ति साहित्य का सामाजिक, संस्कृति और साहित्यिक दृष्टि से विशेष योगदान है. वारकरी सम्प्रदाय के संत नामदेव ने गाँव-गाँव घूमकर समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वास को दूर किया. उन्होंने जाति-भेद और छुआछूत के भेदभाव को समाज से मिटने का प्रयास किया. उन्होंने 'चोखोबा' नामक अछूत का स्मारक बनवाया। वे किसी पूजा-उपासना के विरुद्ध नहीं थे, वे उस देवता को मानते थे, जो सबके मन-मंदिर में रहता है.

'हिन्दू पूजै देवरा, मुसलामाणु मसीद।
नामे सोई सेविआ, यह देहुरा न मसीद।।"

रायबरेली, उ.प्र. से श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'षैली' ने कहा 'भक्तिकाल के कवियों ने पुराणों के आधार पर राम कृष्ण के अवतारी रूप का व्यापकता से गुणगान किया है. निर्गुण भक्ति धारा के कवि भी अवतारी ईश्वर को अस्वीकार करने पर भी अपनी भक्ति में प्रेमराग को छोड़ नहीं सके भागवत पुराण में एक श्लोक मिलता है, जिसमें भक्ति की उद्भव और विकास का संकेत है.'

जांजगीर, चांपा, छ.ग. से शोधार्थी श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव ने कहा- 'भक्ति काल के आरंभिक समय में इस्लामिक शासकों जैसे तुगलक, सैयद, लोधी और मुगल के साम्राज्य मे युद्ध, संघर्ष, उथल-पुथल और अशांति के कारण यह काल हिंदुओं के लिए परायण काल के रूप में भी जाना जाता है. इस समय राजनीतिक परिस्थितियां बहुत ही विपरीत थी. जहां कुछ तुगलकवंशी व अन्य शासक हिंदुओं को परेशान किया करते थे उनकी जमीन और विभिन्न प्रकार से समस्याएं उत्पन्न करके उनके सामने एक विचित्र प्रकार की परिस्थितियां उत्पन्न करते थे, परंतु इन सबके बावजूद कुछ शासक हिंदुओं के प्रति सहिष्णुता भी दिखा रहे थे. 'अकबर' अन्य शासकों की तुलना में हिंदुओं के प्रति अधिक सहिष्णुता प्रकट किया करते थे.'

लखनऊ, उ.प्र. से साहित्यकार डॉ० सीमा वर्मा ने कहा 'हमारे देश की वर्तमान स्थिति और पूर्व मध्य काल की राजनैतिक स्थिति लगभग सामान है, और देश की राजनैतिक स्थिति का प्रभाव समाज और जन मानस पर न पड़े यह असंभव है. आज हमारे देश में शासक और शासित में भ्रम की स्थिति है. आज साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने की आवश्यकता है. कबीर साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए बार बार यह बात कहते हैं- हिन्दू मुए राम कहि, मुसलमान खुदाई। कहै कबीर सो जीवता, दुई मैं कदै न जाइ।।

दादू कहते है- दादू न हम हिन्दू होहिंगे न हम मुसलमान। शट्दर्शन में हम नाहीं, हम रातेरहिमान।।

इस प्रकार साम्प्रदायिक सौहार्द्र आज भी प्रासंगिक है.

गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० सूर्य प्रकाश दीक्षित ने कहा-'हिंदी का भक्ति साहित्य यह प्रमाणित करता है कि भक्ति अपने कथन के डेढ़ हजार साल बाद पूरे युवा उत्साह के साथ उत्तर भारत में आई और उसने अपने भव्य भावधारा से उसने जन सामान्य को मन्त्र-मुग्ध कर लिया. सम्पूर्ण भारत-भूमि को एकता के सूत्र में पिरोने के का एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उत्कृष्ट उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है.

गोष्ठी में संस्थान के अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख जो समीक्षक एवं निर्णायक के रुप में उपस्थित ने कहा-'हिन्दी साहित्य के अध्ययन पर शोध करना बहुत कठिन कार्य है. लेकिन इस कार्य को संस्थान देश के विभिन्न राज्यों में अलग-अलग भागों में गहनता से कार्य कर रहा है. शोध पत्र भेजने वाले प्रतिभागियों को अपने शोध लेखों को और विस्तार देने की ओर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए.

गोष्ठी में प्रयागराज की डा. पूर्णिमा मालवीय, प्राचार्या डिग्री कालेज, रायपुर, छ.ग. की डॉ० मुक्ता कौशिक, लखनऊ की डॉ. अर्चना वर्मा, डॉ. कुमुद श्रीवास्तव, श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव तथा मुम्बई की डॉ. मेदिनी शशिकांत अेजनीकर, डॉ० अवधेश कुमार अवध, गुवाहटी, असम ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए.

विक्रमशीला विश्वविद्यालय, उज्जैन कुलानुशासक प्रो. शैलेन्द्र शर्मा, लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. परशुराम पाल, राष्ट्रपति से शिक्षक सम्मान से सम्मानित सोनभद्र के श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, सेवानिवृत्त वित निदेशक श्री नरेन्द्र भूषण जी ने अपने समिचिन विचारों से गोष्ठी को अभिसिंचित किया.

गोष्ठी के संरक्षक एवं संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि धीरे-धीरे विषयगत शोध लेखों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है. देश के सुविद्वजनों के गोष्ठी में सहभागिता हेतु आग्रह आ रहे है. लेकिन सभी शोधार्थियों से आग्रह है कि अपने शोध लेखों को और विस्तार दे. अच्छे लेखन के लिए अच्छा पढ़ना और अच्छा श्रोता बनना अतिआवश्यक है. 30 दिसम्बर की गोष्ठी की शोध लेख विजेता के लिए निर्णायक मंडल ने डॉ० सीमा वर्मा, लखनऊ एवं आडियों के लिए प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित जी द्वारा श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', रायबरेली, उ.प्र. का चयन किया गया.

गोष्ठी में छः साहित्यकारों ने लघु शोध प्रस्तुत किए तथा 10 चयनित साहित्यकारों ने निर्धारित विषय पर विचार प्रस्तुत किए. विचार गोष्ठी में सरस्वती वन्दना डॉ अर्चना वर्मा-लखनऊ तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सीमा वर्मा-लखनऊ ने दिया. विचार गोष्ठी का सफल संचालन एवं संयोजन लखनऊ से हिन्दी सांसद डॉ वन्दना श्रीवास्तव 'वान्या' ने किया. संस्थान निरन्तर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में गहन शोध कार्यों को सम्पादित करवाने हेतु संकल्पित है. संस्थान लगभग 25 वर्षों से हिन्दी सेवा हेतु समर्पित रहा है. गोष्ठी में संरक्षक के रूप में संस्थान सचिव डॉ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी उपस्थिति रहे. इस अवसर पर नवोदित एवं वरिष्ठ साहित्यकारों ने अपनी सहभागिता निभाई.

## 'बनारसी हैण्डलूम सिल्क-बनारस का गौरव' पर जारी हुआ विशेष आवरण

बनारसी हथकरघा रेशम ने बनारस की अर्थव्यवस्था को समष्द्ध करने के साथ-साथ यहाँ की कला और संस्कृति से भी देष-दुनिया को परिचित कराया। आज भी हैंडलूम से निर्मित बनारसी सिल्क साड़ियाँ परंपरा व आधुनिकता का खूबसूरत समन्वय प्रदर्षित करती हैं। उक्त उद्‌गार वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृश्ण कुमार यादव ने 'बनारसी हथकरघा रेषम-बनारस का गौरव' पर विषेश आवरण व विरूपण जारी करते हुए व्यक्त किये। वाराणसी प्रधान डाकघर में डाक विभाग और प्रयाग फिलाटैलिक सोसाइटी के तत्त्वावधान में १६ जनवरी को आयोजित इस कार्यक्रम को जूम एप के माध्यम से भारत के साथ-साथ अन्य देषों में भी प्रसारित किया गया।

पोस्टमास्टर जनरल श्री कृश्ण कुमार यादव ने कहा कि, वाराणसी से जुड़ी तमाम विभूतियों, संस्थानों और विविध विशयों पर डाक विभाग ने समय-समय पर डाक टिकट और विषेश आवरण जारी किए हैं, जिनके माध्यम से आगामी पीढ़ियाँ भी अपनी समष्द्ध संस्कृति व विरासत से रूबरू होंगी। बनारस रेषम पर भी वर्श २००६ में डाक टिकट जारी हो चुका है। श्री यादव ने कहा कि, बनारसी हथकरघा रेषम कला एक प्राचीन और गौरवषाली परम्परा है। हजारों वर्शों से यहाँ के बुनकरों ने बनारसी बिनकारी की मूल परम्परा को जीवित रखते हुए इसमें बहुत से प्रयोग भी किये हैं। एक जिला, एक उत्पाद के तहत भी बनारस में इसे प्रोत्साहित किया जा रहा है। ऐसे में इस विषेश आवरण के माध्यम से बनारसी हैंडलूम सिल्क की प्रसिद्धि देष-दुनिया में और भी विस्तार पायेगी।

प्रयाग फिलाटैलिक सोसाइटी के सचिव श्री राहुल गांगुली ने डाक विभाग द्वारा इस विषेश आवरण जारी किए जाने पर आभार व्यक्त किया और लोगों को फिलेटली से जुड़ने की अपील की।

इस अवसर पर वाराणसी पूर्वी मण्डल के प्रवर अधीक्षक डाकघर श्री सुमीत कुमार गाटसहायक निदेषक श्री प्रवीण प्रसून, प्रवर डाक अधीक्षक श्री सुमीत कुमार गाट, सहायक निदेषक श्री प्रवीण प्रसून, सहायक डाक अधीक्षक आर के चौहान, सुरेष चंद्र, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक मैनेजर सुबलेष सिंह, जनसंपर्क निरीक्षक अरविंद पांडेय, हरिषंकर यादव, राहुल वर्मा, एसपी गुप्ता, रामचंद यादव सहित तमाम अधिकारी-कर्मचारी व फिलेटलिस्ट मौजूद रहे।

## राष्ट्र भक्ति और ईश्वर भक्ति का समन्वय किया गुरु गोविंद सिंह जी ने : प्रो० शर्मा

राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा गुरु गोविंद सिंह जयंती पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया. यह संगोष्ठी गुरु गोविंद सिंह : साहित्य, दर्शन और संस्कृति में योगदान पर केंद्रित थी. संगोष्ठी के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरेराम वाजपेयी, इंदौर थे. प्रमुख वक्ता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलानुशासक प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा, अध्यक्षता डा० राजेंद्र साहिल, जालंधर तथा विशिष्ट अतिथि डा० पूनम गुप्त-जालंधर, संस्था के महासचिव डा० प्रभु चौधरी एवं श्रीमती दीपिका सुतोदिया-गुवाहाटी, असम थीं.

श्री हरेराम वाजपेयी ने गुरु और गोविंद के बारे में बताया कि दोनों एक ही में समाये है. वे योद्धा हैं, राजा हैं कवि भी हैं. उन्होंने अपनी आजीविका ईमानदारी से अर्जित करने पर बल दिया. गुरु वाणी में अध्यात्म के साथ मानव सेवा पर बल दिया गया है.

डा. शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि गुरु गोविंद सिंह जी ने राष्ट्र भक्ति और ईश्वर भक्ति का समन्वय किया. भारतीय इतिहास और संस्कृति में उनका योगदान अद्वितीय है. उन्होंने अद्वैतवाद को सामाजिक यथार्थ और समरसता के साथ जोड़कर नया रूप दिया.

विशिष्ट वक्ता डा. शहाबुददीन नियाज शेख-पुणे, महाराष्ट्र ने कहा कि गुरु गोविंद सिंह ने मानवता के हित में काम किया. वे सम्पूर्ण मानवतावादी थे.

डा. प्रभु चौधरी ने गुरू गोविंद सिंह जयंती पर गुरुवाणी, साहित्य सेवा, राष्ट्रीय एकता, मानवता और इंसानियत के महत्व पर प्रकाश डाला.

डा. राजेन्द्र साहिल ने कहा कि गुरु गोविंद सिंह को दिव्य ज्योति के रूप में माना जाता है. उन्होंने कई रूपों में भारतीय समाज की सेवा की वे साहित्यकार और साहित्य संरक्षक थे. कुशल संगठन के रूप में उन्होंने अविस्मरणीय योगदान दिया.

स्वागत उद्‌बोधक एवं आयोजक शिक्षाविद डा. मुक्ता कान्हा कौशिक, सरस्वती वंदना डॉ. राशि चौबे, सफल संचालन श्रीमती पूर्णिमा कौशिक ने किया.

कार्यक्रम में डा. प्रवीण बाला, गरिमा गर्ग, डा. शिवा लोहरिया सहित अनेक शिक्षाविद एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे.

# भाव अभिव्यक्ति के लिए कला के रूप में लेखन का विकास हुआ

मानव सभ्यता के विकास में भावों की अभिव्यक्ति के लिए लेखन कला विकसित हुई. इस आशय का प्रतिपादन विश्व हिंदी साहित्य संस्थान, प्रयागराज के अध्यक्ष प्राचार्य डा. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ने किया. हिंदी लेखन के विविध आयाम विषय पर विश्व हिंदी साहित्य संस्थान प्रयागराज की लखनऊ ईकाई द्वारा आयोजित आभासी गोष्ठी के अध्यक्ष के रूप में वे बोल रहे थे. उन्होंने आगे कहा कि लेखन मानव मन को संतुष्टि प्रदान करता है. आजीविका के माध्यम के रूप में हिंदी आज विकसित हो रही है.

मुख्य अतिथि डा. चंद्रशेखर सिंह, विभागाध्यक्ष हिन्दी. जे.पी. मिश्र महाविद्यालय, मुंगेली, छत्तीसगढ़ ने इस अवसर पर कहा कि वर्तमान में लेखक हिंदी मात्र पढ़ते ही नहीं, बल्कि हिंदी जीते भी है. प्रवासी साहित्यकारों ने हिंदी को विश्व मंच पर पहुंचाया है. आज हिंदी लेखन भरपूर मात्रा में हो रहा है.

मुख्य वक्ता राष्ट्रपति से पुरस्कृत शिक्षक श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि लेखन स्वयं को तलाशने की विधि है. दुख और सुख इन दोनों घड़ियों में भी लेखन की निर्मिती होती है. परिणाम स्वरूप हिंदी लेखन बहुआयामी बन रहा है.

शोध छात्र श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव, छत्तीसगढ़ ने कहा कि लेखन में भाषा और व्याकरण पर ध्यान देना जरूरी है. क्योंकि व्याकरण भाषा को नियंत्रित करता है तथा भाषा से लेखन में निखार आता है. आज हिंदी लेखन में नयापन लाने का प्रयास हो रहा है.

लखनऊ से हिन्दी सांसद एवं शिक्षिका श्रीमती वंदना श्रीवास्तव 'वान्या', ने व्यक्त किया कि हिंदी केवल भारत की ही नहीं बल्कि समस्त विश्व की भाषा है. हिंदी लेखन विविध विधाओं के माध्यमों से जनमानस में पहुंच रहा है. प्रयागराज के एक डिग्री कॉलेज की प्राचार्या डा. पूर्णिमा मालवीय ने कहा कि हिंदी की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है. आत्मनिर्भर भारत बनने में हिंदी योगदान दे सकती है.

गोष्ठी का आरंभ श्रीमती पूर्णिमा कौशिक द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज के सचिव डा. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने स्वागत भाषण में कहा कि साहित्य में विधाओं की कोई निश्चित सीमा नहीं है. समय के साथ कुछ मान्यताओं के आधार पर इनकी पहचान निर्मित हो जाती है.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की छत्तीसगढ़ इकाई की हिंदी सांसद डा. मुक्ता कान्हा कौशिक, रायपुर ने संस्था का परिचय प्रस्तुत किया और गोष्ठी का सफल संचालन किया. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की छत्तीसगढ़ इकाई की इस प्रथम गोष्ठी में पटल पर अनेक प्रतिभागी उपस्थित थे. गोष्ठी का सुंदर व सफल संचालन हिंदी सांसद डा. मुक्ता कौशिक ने किया तथा डा. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने ध न्यवाद ज्ञापन किया.

**खुशी देना ही खुशी पाने का आधार है।**

दाउजी

# विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज

## द्वितीय ऑन लाईन गोष्ठी का विषय :

## हिन्दी लेखन के विविध आयाम

आयोजन की तिथि : 15 फरवरी 2021, समयः सायं 7 बजे

इसमें दो भाग है लेख और वाचन जूम-एप पर. कोई भी हिन्दी प्रेमी (देश-विदेश) का इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आप लेख/जूम एप अथवा दोनों में प्रतिभाग कर सकते है. वक्ताओं का चयन आयोजक मंडल करेगा. सर्वश्रेष्ठ लेख/वाचक को संस्थान अगले आयोजन में सम्मानित करेगा एवं मई 2021 तक सर्वाधिक बार सर्वश्रेष्ठ चयनित होने वाले प्रतिभागी को रजत जंयति आयोजन पर भी सम्मानित किया जाएगा एवं लेख 10.02.2021 तक प्राप्त हो जाने चाहिए. यह गोष्ठी प्रत्येक माह की 15 तारिख निर्बाध रूप से चलती रहेगी.

आयोजकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, छत्तीसगढ़ ईकाई

अपने आलेख संस्थान के ई-मेल आईडी hindiseva15@gmail.com, पर भेज सकते है एवं वाचन के लिए निम्नलिखित ह्वाटसएप नंबर 9335155949, कार्यक्रम संयोजक (डॉ० मुक्ता कौशिक) : 8433773355 पर आयोजन के तीन दिन पूर्व सम्पर्क कर सकते है। कृपया फोन पर वार्ता न करें।

# रजत जयंति आयोजन

संस्थान जून 2021 में अपना 25 वर्ष पूर्ण कर रहा है। इस अवसर पर दो दिवसीय वृहद आयोजन किया जाएगा.

**प्रथम दिन**

-संस्थान नवनिर्मित निज पुस्तकालय एवं वाचनालय का उदघाटन
-संस्थान के पदाधिकारियों/हिन्दी सांसदो एवं सदस्यों परिचय सत्र
-संस्थान के पदाधिकारियों/हिन्दी सांसदो एवं सदस्यों की काव्य, चित्रकला, काव्य अतांकक्षरी प्रतियोगिता, नृत्य एवं गायन प्रतियोगिता

**दूसरे दिन**

-संस्थान के कुलगीत का लोकार्पण
-संस्थान की रजत जयंति स्मारिका का विमोचन
-सारस्वत सम्मान 2019–20
-श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास द्वारा सारस्वत सम्मान
-मीडिया फोरम ऑफ इंडिया न्यास द्वारा सारस्वत सम्मान
-संस्थान की वेबसाईट का लोकार्पण
-काव्य सम्राट प्रतियोगिता-2019–20

इस आयोजन में 25 प्रतिभाओं (साहित्य/समाज सेवा/कला/संस्कृति) को संस्थान की उपाधियों / सारस्वत सम्मानों से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी गण रजत जंयति स्मारिका के लिए सशुल्क शुभकामनाएं, अपने प्रकाशनों का प्रचार-प्रसार, विज्ञापन, चंदा के माध्यम से यथा सम्भव सहयोग प्रदान करें। संस्थान के पदाधिकारियों/सदस्यों के लिए सामूहिक आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान करेहिन्दी सांसदो एवं सदस्योंतथा एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जाएगा. अगर आप इस समारोह में प्रतिभाग करना चाहते हैं तो अपना पंजीकरण ई-मेल के माध्यम से पंजीकरण प्रपत्र प्राप्त कर ३० अप्रैल २०२१ तक करा सकते है। सभी पंजीकृत प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।